B-3

श्री बगला नित्यार्चन

लेखक

परम पूज्य 'राष्ट्रगुरु' श्री १००८ श्री स्वामी जी महाराज

प्रकाशक

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

अलोपीबाग मार्ग, प्रयाग--६

साधनमाला चतुर्थं वर्ष—५ मणि

श्री बगला नित्यार्चन

लेखक

परम पूज्य 'राष्ट्रगुरु' श्री १००८ श्री स्वामी जी महाराज

श्री पीताम्बरा पीठ, दतिया (म० प्र०)

प्रकाशक

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

अलोपीबाग मार्ग, प्रयाग—६

चतुर्थ संस्करण] सम्वत् २०४० [मूल्य ४·००

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
निवेदन	क
प्राक्कथन	१
पहला उल्लास—प्रातःकृत्यादि तर्पणान्त विवरण	१६
दूसरा उल्लास—द्वार-पूजादि मातृका-न्यासान्त ,,	२१
तीसरा उल्लास—मूल-विद्या-न्यासादि जपान्त ,,	२५
चौथा उल्लास—पात्रासादन	२६
पाँचवाँ उल्लास—अन्तर्यागादि मूल-देवी-पूजा	३७
छठा उल्लास—आवरण-देवता-पूजन	४०
सातवाँ उल्लास—नित्य-होमादि विसर्जनान्त विवरण	४४

निवेदन

यह श्रीबगला-नित्यार्चन तान्त्रिक पूजन का संग्रह है। इसे दतिया के पूज्य श्री १००८ स्वामी जी महाराज ने परशुराम कल्पसूत्र के आधार पर लिखा है। इसका पूजन-विधान सर्वाङ्ग-पूर्ण है। ऐसी उपयोगी पद्धति अब तक कहीं से प्रकाशित नहीं हुई। न्यासादि, पात्र-स्थापन, आवरण-पूजन, षडाम्नाय-पूजन आदि इसमें विस्तार के साथ दिये गए हैं।

प्रारम्भ में श्री स्वामी जी महाराज का जो प्राक्कथन है, उससे बगला महाविद्या के विषय पर विशद प्रकाश पड़ता है।

यह पुस्तक श्री भगवती बगलामुखी के उपासकों के लिये अत्यधिकउपयोगी सिद्ध हुई है। इसका प्रमाण यही है कि यह इसका चौथा संस्करण है।

इस पुस्तक के सिवा हमारे द्वारा 'श्रीबगला कल्पतरु' नामक लेख-संग्रह भी प्रकाशित किया गया है, जिससे श्री बगलोपासना के सैद्धान्तिक पक्ष का ज्ञान मिलता है। इस प्रकार भगवती पीताम्बरा की आराधना के क्रियात्मक एवं दार्शनिक दोनों पक्षों का प्रामाणिक साहित्य जिज्ञासु भक्तों के लिये सुलभ हो गये हैं। इससे सभी बन्धु लाभान्वित होंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

प्रयाग भाद्र अमावस्या २०४० —रमादत्त शुक्ल

श्री बगला-कल्पतरु

[सचित्र]

'ब्रह्मास्त्र-विद्या' के नाम से प्रख्यात भगवती 'श्री बगला' की उपासना प्राचीन काल से अमोघ मानी गई है। सङ्कट-ग्रस्त लोग इनकी शरण लेकर निश्चिन्त हो जाते हैं। वास्तव में 'पीताम्बरा श्रीबगला' का ऐसा ही प्रभाव शत-प्रतिशत लोगों के अनुभव में आता रहा है किन्तु अधिकतर लोग इनके मन्त्र, स्तोत्रादि का प्रयोग भौतिक कामनाओं के लिये ही करते रहे हैं, जब कि इनकी उपासना से आध्यात्मिक उत्कर्ष भी सहज ही प्राप्य है।

'भगवती श्रीबगला' का मन्त्र, ध्यान, पूजा-विधि आदि सभी बातें गोपनीयता के कारण लोगों के लिये दुर्बोद्ध थीं। 'चण्डी' वर्ष २२ के 'श्रीबगला विशेषांक' में प्रकाशित लेखादि साहित्य को पुनः सम्पादित कर प्रस्तुत पुस्तक के रूप में जिज्ञासुओं के लिये सुलभ कर दिया गया है। भ० बगला के स्तोत्र व अनेक नये विषयों का भी विवेचन किया गया है।

पुस्तक में 'भगवती बगला जी का ध्यान-सम्मत तिरङ्गा चित्र व पूजन-यन्त्र भी दिया गया है। १०० पृ० की सइ अनुपम पुस्तक का मूल्य है केवल १५ रु०।

प्राक्कथन

काञ्चन-पीठ-निविष्टां सादर-मुनिवर-वर्णित-प्रभावाम् ।
करुणा-पूरित-नयनां श्रीबगलां पीताम्बरां वन्दे ॥

परम करुणामयी श्री जगन्माता ने देवताओं की स्नेह-पूर्ण प्रार्थना से द्रवीभूत होकर यह प्रतिज्ञा की है कि—

'जब जब हमारे भक्त असुरों से पीड़ित होंगे, तब तब मैं अवतार धारण करके असुरों का विनाश कर उन्हें सुखी करूँगी' (सप्तशती, अध्याय ११-५५)।

सारे विश्व में ऐसा कोई भी स्थान नहीं है, जहाँ किसी-न-किसी रूप में माता की पूजा न होती हो। ये सारे रूप उक्त प्रतिज्ञा की स्मृति के ही सूचक हैं। इनके साथ एक महत्वपूर्ण इतिहास का होना भी अनिवार्य है। तथापि काल की कुटिल गति के प्रभाव से हमारी दृष्टि से वह तिरोहित है। देवी-भागवतादि पुराण ग्रन्थों में जो कुछ इस विषय के इतिहास उपलब्ध हैं, वे इस महान् संस्मरण के बहुत अल्प ही निदर्शन हैं। अनेक रहस्य अभी तक छिपे हुये हैं। श्रीजगदम्बा की शुभ प्रेरणा से ही वे प्रकट हो सकते हैं।

शक्ति-उपासना में इस समय काली, तारा और षोडशी विद्या के ही रूप ध्येय, ज्ञेय रूप से विशेषतः प्रचार में हैं। अन्य महा-विद्याओं के विषय में बहुत कम ही प्रकाश हुआ है। श्री बगला-मुखी महा-विद्या के विषय में वेद एवं तन्त्र-ग्रन्थों में जो कुछ

कहा गया है, उसी पर यहाँ कुछ विचार करते हैं, जिससे इस विद्या का रहस्य पाठकों को व्यक्त होगा।

स्वतन्त्र तन्त्र में कहा गया है—

अथ वक्ष्यामि देवेशि ! बगलोत्पत्ति - कारणम् ।
पुरा कृत - युगे देवि ! वात - क्षोभ उपस्थिते ।।
चराचर - विनाशाय विष्णुश्चिन्ता - परायणः ।
तपस्यया च संतुष्टा महा - त्रिपुरसुन्दरी ।।
हरिद्राख्यं सरो दृष्ट्वा जल - क्रीडा - परायणा ।
महा - पीत - ह्रदस्यान्ते सौराष्ट्रे बगलाम्बिका ।।
श्रीविद्या - सम्भवं तेजो विजृम्भति इतस्ततः ।
चतुर्दशी भौम - युता मकारेण समन्विता ।।
कुल - ऋक्ष - समायुक्ता वीर - रात्रिः प्रकीर्तिता ।
तस्यामेवार्ध - रात्रौ तु पीत - ह्रद - निवासिनी ।।
ब्रह्मास्त्र - विद्या संजाता त्रैलोक्य - स्तम्भिनी ।
तत् - तेजो विष्णुजं तेजो विद्यानुविद्ययोर्गतम् ।।

अर्थात् श्री शङ्कर जी पार्वती से कहते हैं कि 'हे देवि ! श्रीबगला विद्या के आविर्भाव को कहता हूँ। पहले कृत-युग में सारे जगत् का नाश करनेवाला वात-क्षोभ (तूफान) उपस्थित हुआ। उसे देखकर जगत् की रक्षा में नियुक्त भगवान् विष्णु चिन्ता-परायण हुये। उन्होंने सौराष्ट्र देश में हरिद्रा सरोवर के समीप तपस्या कर श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी भगवती को प्रसन्न किया। श्रीविद्या ने ही बगला-रूप से प्रकट होकर समस्त तूफान को निवृत्त किया। त्रैलोक्य-स्तम्भिनी ब्रह्मास्त्र-महाविद्या श्रीविद्या एवं वैष्णव तेज से युक्त हुई। मङ्गलवार-युक्त चतुर्दशी, मकार, कुल-नक्षत्रों से युक्त वीर-रात्रि कही जाती है। इसी को अर्ध-रात्रि में श्रीबगला का आविर्भाव हुआ था।'

उक्त कथानक के अनुकूल कृष्ण-यजुर्वेद की काठक-संहिता में दो मन्त्र आये हैं, जिनसे इस विद्या का वैदिक रूप प्रकट होता है—

विराड्-दिशां विष्णु-पत्न्यघोरास्येशाना सहसो या मनोता।
विश्व-व्यचा इषयन्ती सुभूता शिवा नो अस्तु अदितिरुपस्थे।
विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्या अस्येशाना सहसो विष्णु-पत्नी।
बृहस्पतिर्मातारश्वोत वायुस्संध्वाना वाता अभितो गृणन्तु।
(का० सं०, २२ स्थानक, १, २ अनु० ४९, ५०)

अर्थ—'विराट् दिशां' दशों दिशाओं को प्रकाशित करने-वाली, 'अघोरा' सुन्दर स्वरूपवाली, 'विष्णु-पत्नी' विष्णु की रक्षा करनेवाली वैष्णवी महा-शक्ति, 'अस्य' त्रिलोक जगत् की 'ईशाना' ईश्वरी तथा 'सहसः' महान् बल को धारण करनेवाली जो 'मनोता' कही जाती है। 'मनोता' का विवेचन ऐसा किया गया है—

वाग्वै देवानां मनोता तस्यां हि तेषां मनांसि ओतानि, अग्निर्वै देवानां मनोता तस्मिन् हि तेषां मनांसि ओतानि। गौर्हि देवानां मनोता तस्यां हि तेषां मनांसि ओतानि (ऐ० ब्रा० २, १०)

अर्थात् देवताओं का मनस्तत्त्व वाक्, अग्नि और गौ में ओत-प्रोत है। अतः इन तीनों शक्तियों के समुदाय को 'मनोता' कहते हैं। 'विश्वव्यचा' अन्तरिक्ष लोक-स्वरूप समस्त नक्षत्र-मण्डल में प्रकाशित होनेवाली, 'अन्तरिक्षं विश्वव्यचाः' तै० ३-२-३७, 'इषयन्ती' समस्त जगत् को प्रेरित करनेवाली इच्छा-शक्ति-रूपा, 'सुभूता' आनन्दार्थ अनेक रूपों में आविर्भूत होनेवाली, 'अदितिः' अविनाशी-स्वरूप देव-माता, 'उपस्थे' हम उपासकों के समीप, 'शिवा' कल्याण-स्वरूपवाली, 'अस्तु' हो। 'दिवः विष्टम्भः' जो

दिव-लोक का स्तम्भन करनेवाली है। मन्त्र में आया हुआ 'विष्टम्भः' पद स्तम्भन-तत्व को बता रहा है। 'धरुणः पृथिव्याः' पृथिवी तत्व की जो प्रतिष्ठा है—'प्रतिष्ठा वै धरुणम्' श० ७-४-२-५। श्रीबगला माता का बीज पार्थिव है—'बीजं स्मेरत् पार्थिवम्' तथा बीज-कोश में इसे ही प्रतिष्ठा कला भी कहते हैं। 'अस्य सहसः ईशाना' सारे जगत् पर जिसका शासन है, वह 'विष्णु-पत्नी'—विष्णु की रक्षा करनेवाली, बृहस्पति, मातरिश्वा और वायु-रूपवाली, 'संध्वाना' शब्द-तत्व का कारण, 'वाता' वात-क्षोभ को शान्त करनेवाली, 'अभितो गृणन्तु' हमें उभय-लोक में भुक्ति एवं मुक्ति प्रदान करे। 'स्वर्गापवर्ग-प्रदे' इस वचन से सिद्ध होता है।

स्वतन्त्र तन्त्र में उल्लिखित कथा से इन दोनों मन्त्रों में कथित तत्व अभिन्न ही सिद्ध हो रहा है।

स्तम्भन-शक्ति का स्वरूप

नाम-रूप से व्यक्त एवं अव्यक्त सभी पदार्थों की स्थिति का आधार स्तम्भन-शक्ति है। इसी अभिप्राय में कहा है—

'आधार-भूता जगतस्त्वमेका, मही-स्वरूपेण यतः स्थिताऽसि'

(सप्तशती, अध्याय ११-४)

वेद एवं वेदान्त शास्त्र में इसे ही ब्रह्म-तत्व कहा गया है—

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तंभितं येन नाकः।

(य० वे० ३२-६)

अर्थात् उस परम तत्व स्तम्भन-शक्ति से ही द्यौ-लोक वृष्टि प्रदान करता है; उसी से आदित्य-मण्डल स्तम्भित है; उसी से स्वर्ग-लोक भी ठहरा हुआ है। इस मन्त्र में स्तम्भन-शक्ति का स्वरूप एवं उपयोग बताया गया है। बृहदारण्यक के अक्षर ब्राह्मण में इसी की व्याख्या विस्तार से की गई है—

'स होवाचैतद्वै तदक्षरं गार्गि ! ब्राह्मणा अभिवदन्ति···
एतस्याक्षरस्य प्रशासने गार्गि ! सूर्या-चन्द्रमसौ विधृतौ तिष्ठतः...
द्यावा-पृथिव्यौ विधृते तिष्ठतः' (बृ० ४-८-८-९)।

अर्थात् 'हे गार्गि ! इसी अक्षर-तत्व को ब्राह्मण ब्रह्म-वेत्ता योगी अक्षर कहते हैं। इसी से सूर्य, चन्द्र, द्यौ, पृथिवी आदि समस्त लोक अपनी-अपनी मर्यादा में ठहरे हुये हैं।' वेदान्त के 'अक्षरामबरान्त-धृतेः' तथा 'सा च प्रशासनात्' (वे० द० १-३-१०, ११) इन दोनों सूत्रों में इसी की मीमांसा की गई है। स्त्री-लिङ्ग का प्रयोग होने से परम तत्व शक्ति-रूपवाला है, यह स्पष्ट हो जाता है। 'विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत्', इस श्लोक में 'विष्टभ्य' पद से भगवान् श्रीकृष्ण ने उक्त तत्त्व का ही समर्थन किया है। इस प्रकार श्रुति-स्मृति के प्रमाणों द्वारा स्तम्भन-शक्ति का स्वरूप ज्ञात होता है। वही विष्णु-पत्नी सारे जगत् का अधिष्ठान ब्रह्म-स्वरूपवाली है। इसे ही तन्त्र में 'श्री बगला महाविद्या' कहा गया है।

इसके इस व्यापक स्वरूप के ज्ञान से साधक अविद्या से मुक्त होकर मुक्ति लाभ करता है। महा-विद्या नाम की चरितार्थता इसी से होती है। दूसरा स्वरूप कर्म-मार्ग का है। जगन्माता की ज्ञान और क्रिया इन दोनों शक्तियों का आश्रय कर श्रेय एवं प्रेय इन दोनों धर्मों का निरूपण आर्य-शास्त्रों में किया गया है। 'यतोऽभ्युदय-निश्रेयस्-सिद्धिः स धर्मः'—इस प्रसिद्ध कणाद सूत्र में कहा है। उक्त ज्ञान-स्वरूप मुमुक्षु साधकोंके लिये माना जाता है। दूसरा कर्मकाण्ड ऐहिक सुखों के लिये उपयुक्त होता है। इसके तीन स्वरूप हैं— शान्तिक, पौष्टिक और आभिचारिक। दैवी प्रकोप से उत्पन्न नाना प्रकार की आधि-व्याधियों के शमन

के लिये शान्ति-कर्म का उपयोग होता है। 'धन-जनानां वर्धनं पुष्टिः'—धन, जन आदि लौकिक उपयोगी वस्तुओं की वृद्धि के लिये पौष्टिक कर्मों का अनुष्ठान होता है और शत्रुओं के निग्रह के लिये आभिचारिक कर्मों का विधान है।

इन तीनों प्रकार के कर्मों का अनुष्ठान स्तम्भन-महाशक्ति के रूप मे होता है। स्वतन्त्र तन्त्र में शान्ति-कर्म का उपयोग बताया गया है। आधि-व्याधि का निरोध स्तम्भन का प्रधान कार्य है। जिस तरह धातुओं की न्यूनता से रोगी की शारीरिक क्षीणता होकर दुर्बलता होती जाती है, उस अवस्था में आयुर्वेदज्ञ वैद्य क्षीणता की स्तम्भक औषधों को देकर रोगी को पुष्ट करने के लिये पौष्टिक उपचार कर उसे बलिष्ठ बना देते हैं, इसी प्रकार दारिद्र्य-ग्रस्त मनुष्यों को पौष्टिक कर्मों द्वारा धन-जन की वृद्धि करने में स्तम्भन-शक्ति का उपयोग होता है। इसका निरूपण वैदिक, तान्त्रिक दोनों धर्मों में विस्तार के साथ किया गया है। मारण, मोहनादि आभिचारिक कर्मों में तो स्तम्भन का साम्राज्य ही है। श्रीबगलामुखी का प्रसिद्ध तन्त्र-ग्रन्थ 'सांख्यायन' इससे भरा हुआ है। क्रमशः ये तीनों कर्म सात्विक, राजस और तामस कहे जाते हैं।

इन आभिचारिक प्रसङ्गों में श्रीबगला विद्या की प्रधानता होने से बहुत से लोग इन्हें केवल तामसिक शक्ति कहते हैं। कामधेनु-तन्त्र में तामस प्रकरण में ही इनकी गणना की गई है और 'कल्याण' के शक्ति-अङ्क के 'दश महाविद्या' शीर्षक लेख में पं० मोतीलाल शर्मा ने शत्रु-निरोध में ही इस विद्या का उपयोग लिखा है परन्तु यह बात एक-देशीय है, प्रधानता के अभिप्राय में ही है, वास्तविक रूप से नहीं। शक्ति-सङ्गम तन्त्र (ताराखण्ड) में तो त्रि-शक्ति रूप में ही श्रीबगला को माना है—

'सत्ये काली च श्रीविद्या कमला भुवनेश्वरी ।
सिद्ध - विद्या महेशानि ! त्रिशक्तिर्बगला शिवे ॥'

अतः श्रीबगला माता को केवल तामस मानना ठीक नहीं है। आभिचारिक कृत्यों में भी रक्षा की ही प्रधानता होती है। यह कार्य इसी शक्ति द्वारा निष्पन्न होता है। इसीलिये इसके बीज की एक संज्ञा रक्षा-बीज भी है (मन्त्र-योग-संहिता)—

'शिव-भूमि-युतं शक्ति-नाद-बिन्दु-समन्वितम् ।
बीजं रक्षा-मयं प्रोक्तं मुनिभिर्ब्रह्म-वादिभिः।'

यजुर्वेद के प्रसिद्ध आभिचारिक प्रकरण में अभिचार-स्वरूप की निवृत्ति में इसी शक्ति का विनियोग किया गया है। इस प्रकरण का यजुर्वेद की सभी संहिताओं (तैत्तरीय, मैत्रायणी, काक, काठक, माध्यंदिनि, काण्व) में समान-रूप से पाठ आया है। माध्यंदिनि संहिता के भाष्यकर्त्ता उव्वट, महीधर भाष्यकारों ने जैसा अर्थ इसका लिया है, उसका सार यहाँ देते हैं। पं० ज्वालाप्रसाद कृत मिश्र भाष्य में इसका हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है।

आभिचारिक प्रकरण

शुक्ल यजुर्वेद माध्यंदिनि संहिता के पाँचवें अध्याय की २३, २४, २५ वीं कण्डिकाओं में अभिचार-कर्म की निवृत्ति में श्रीबगला महाशक्ति का वर्णन इस प्रकार आया है—'रक्षोहणं वलग-हनं वैष्णवीमिदमहं तं वलगमुत्किरामि' (य० ५, अ० २३) अर्थात् 'राक्षसों द्वारा किये गये अभिचार की निवृत्ति के लिये वैष्णवी महाशक्ति को प्रतिपादन करनेवाली महावाणी को इन्द्र से कहो' इत्यादि प्रसङ्ग में बगला-मुखी विद्या का स्वरूप वेद ने परम-रहस्य रूप से बताया है। वेद में तन्त्रशास्त्र-प्रसिद्ध

बगला-पद 'वलगा' इस व्यत्यय नाम से कहा जाता है। इसका अर्थ उव्वट ने ऐसा किया है—

'वलगान् कृत्या-विशेषान् भूमौ निखनितान् शत्रुभिर्विनाशार्थं हन्तीति वलगहा तां वलग-हनम्' (उव्वट भाष्य)

अर्थात् 'शत्रु के विनाश के लिये कृत्या-विशेष भूमि में जो गाड़ देते हैं, उन्हें नाश करनेवाली वैष्णवी महाशक्ति को वलगहा कहते हैं।' यही अर्थ वगलामुखी का भी है।

'खनु अवदारणे' इस धातु से 'मुख' शब्द बनता है, जिसका अर्थ मुख में गये पदार्थ का चर्वण या विनाश ही अभिप्रेत होता है। इस प्रकार शत्रुओं द्वारा किये हुये अभिचार को नष्ट करनेवाली महाशक्ति का नाम बगलामुखी चरितार्थ होता है। श्रीमहीधर ने इसका स्पष्ट अर्थ ऐसा किया है—

'पराजयं प्राप्य पलायमानै राक्षसैरिन्द्रादि-वधार्थमभिचाररूपेण भूमौ निखाता अस्थि-केश-नखादि-पदार्थाः कृत्या-विशेषा वलगाः।'

अर्थात् 'इन्द्रादि देवताओं द्वारा पराजित होकर भागे हुये राक्षसों ने देवताओं के बध के लिये अस्थि, केश, नखादि पदार्थों के द्वारा अभिचार किया।' तैत्तरीय ब्राह्मण में भी कहा है—'असुरा वै निर्यन्तो देवानां प्राणेषु वलगान् न्यखनन्' अर्थात् देवताओं को मारने के लिये असुरों ने अभिचार किया। शतपथ ब्राह्मण (३-४-३) में भी इसे इस प्रकार बताया है—

'यदा वै कृत्यामुत्खनन्ति अथ सालसामोघाभिभवति तथा एवैष एतद्-यस्मा अत्र कश्चित् द्विषन् भ्रातृव्यः कृत्यां वलगान् निखनति तानेवैतदुत्किरति।'

उक्त ही अर्थ इस वचन का भी है। 'वलगा' का अर्थ महीधर ने इस प्रकार किया है—'यस्य बधार्थं क्रियते तं वृण्वन्नाच्छादयन्

गच्छतीति वलगः' (महीधर भाष्य) अर्थात् 'जिसके वध के लिये कृत्या का प्रयोग किया जाता है, उसे गुप्त रीति से मार देता है।' इसीलिये महर्षि यास्क ने 'वलगो वृणोतः' (नि० ६) 'वृञ् आच्छादने' धातु से बनाया है। 'वलगान्' इसी द्वितीयान्त पद के अनुकरण से बगला यह तान्त्रिक नाम निष्पन्न हुआ है। भगवती के 'बगलामुखी' इस संज्ञा नाम की सिद्धि पर वैयाकरण लोग आपत्ति करते हैं कि यह नाम अशुद्ध है क्योंकि 'नख-मुखात् संज्ञायाम्' इस सूत्र से 'ङीष्' प्रत्यय का निषेध होकर आ-प्रत्यय होकर 'बगलामुखा' ही नाम शुद्ध है परन्तु 'स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्' इस सूत्राधिकार से उक्त सूत्र की प्रवृत्ति होती है। यहां 'मुखी' शब्द स्वाङ्ग-वाची नहीं है। बगला के निःसारण में ही 'मुख' शब्द का प्रयोग है। 'मुखं निःसरणम् इत्यमरः' तथा 'मुखमुपाये प्रारम्भे श्रेष्ठे निःसरणास्ययोः इति हैमः'। उपाय, प्रारम्भ, श्रेष्ठ, निःसरण और मुख के अर्थ में ही 'मुख' शब्द का प्रयोग होता है। अतः उक्त सूत्र की यहाँ प्राप्ति ही नहीं है। ज्वालामुखी, सूर्यमुखी, गौमुखी शब्दों की तरह यह शब्द भी सिद्ध ही है।

यह शक्ति वैष्णवी है। यह प्रकरण से भी सिद्ध है क्योंकि इस प्रकरण के पूर्व वैष्णव सूक्त का प्रसङ्ग है। अथर्ववेद में इस वलगा का प्रसङ्ग अनेक स्थानों पर आया है। उनमें से एक 'वलगा-सूक्त' का पाठ यहाँ देते हैं जिसके विषय में अथर्ववेदी विद्वानों की ऐसी सम्मति है कि इसके पाठ से कृत्या का निवारण शीघ्र ही हो जाता है। इस सूक्त (अथर्व ५ का., ६ अनु.) में अनेक प्रकार कृत्या के दिये हुये हैं—

बगला सूक्त

यां ते चक्रुः रामे पात्रे यां चक्रुर्मिश्र-धान्यके,
आमे मांसे कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति-हरामि तां ॥
यां ते चक्रुः कृक-वाकाः वजे वा यां कुरीरिणि।
अव्यां ते कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति-हरामि तां ॥
यां ते चक्रुः एक - शफे पशूनामुभयादति ।
गर्दभे कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति- हरामि ताम् ॥
यां ते चक्रुरमूलायां वलगं वानराच्याम् ।
क्षेत्रे ते कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति-हरामि ताम् ॥
यां ते चक्रुर्गार्हपत्ये पूर्वाग्नावुत दुश्चितः ।
शालायां कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति-हरामि ताम् ॥
यां ते चक्रुः सभायां यां चक्रुरधि - देवने ।
अक्षेषु कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति-हरामि ताम् ॥
यां ते चक्रुः सेनायां यां चक्रुरिष्वायुधे ।
दुन्दुभौ कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति-हरामि ताम् ॥
यां ते कृत्यां कूपे बदधुः श्मशाने वा निचख्नुः।
सद्मनि कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति-हरामि ताम् ॥
यां ते चक्रुः पुरुषस्यास्थे अग्नौ सङ्कु-सुके च याम् ।
म्रोकं निर्दाहं क्रव्यादं पुनः प्रति - हरामि तां ॥
अप थैनाज भारेणां तां पथेतः प्रहिण्मसि ।
अधीरो मर्या धीरेभ्यः सञ्जभारा चित्या ॥

यश्चकार न शशाक कर्तुं शश्ने पादमंगुरिम् ।
चकार भद्रमस्मभ्यमभगो भगवद्भ्यः ॥
कृत्या कृतं वलगिनं शपथेऽय्यम् ।
इन्द्रस्तं हन्तुं महता वधेनाग्निर्विध्यत्वस्तया ॥

सूक्त का अर्थ सरल है। अतः इसके अनुवाद करने की आवश्यकता नहीं है। इसके विषय में एक अनुभवी विद्वान् का कहना है कि कृत्या के निवारण में यह सूक्त अपूर्व शक्ति रखता है। केवल एकादश पाठ ही पर्याप्त हैं।

इसके अतिरिक्त 'श्री ललिता-सहस्रनाम' के माहात्म्य में—

'यो वाभिचारं कुरुते नाम सहस्र पाठके।
निवर्त्य तत क्रियांहन्यात् तं व प्रत्यङ्गिरा स्वयम् ॥ ६८॥

इस श्लोक का भाष्य इस प्रकार किया गया है—

'अभिचारं अदृष्ट-द्वारक वैरि-मारण-साधन-क्रियां श्येन-यागादि-रूपां निवर्त्य पराकृत्य पराङ्-मुखीकृत्येति यावत् प्रत्यङ्गिरा अथर्वण भद्रकाली देवता अथर्वण वेद-मन्त्र-काण्डे शौनक-शाखाया द्वात्रिंशदृचः।'

अर्थात् श्रीललिता-सहस्रनाम-पाठी के ऊपर जो कोई अभिचार करता है, उसे प्रत्यङ्गिरा शक्ति स्वयं उसकी क्रिया को लौटाकर मार देती है। अदृष्ट द्वारा शत्रु के मारण की क्रिया को अभिचार कहते हैं। शौनक शाखा के उक्त स्थल पर ये मन्त्र आये हैं। इन मन्त्रों में 'बलग' शब्द भी आया है तथा 'प्रत्यङ्गिरस्' शब्द एक मन्त्र में आने से इसे 'प्रत्यङ्गिरा' नाम दिया गया है। इस प्रत्यङ्गिरा शक्ति का इस विषय में बड़ा माहात्म्य है। इसके अनेक स्तोत्र-मन्त्र भी उपलब्ध होते हैं। 'श्री काली नित्यार्चन' में एक प्रभावशील स्तोत्र साधक-प्रवर

श्री श्यामानन्दनाथ जी ने दिया है। श्री बगलामुखी एवं श्री प्रत्यङ्गिरा दोनों शक्तियों का स्वरूप इस अंश में विलक्षण प्रभाव रखता है, यह सारा साधक-समुदाय जानता है, विशेष लिखने की आवश्यकता नहीं है।

कृत्या क्या है ?

'कृती छेदने' इस धातु से 'कृत्या' शब्द बनता है, जिसका अर्थ हिंसात्मक काय होता है। इसी अर्थ को लेकर इसकी लोक में प्रवृत्ति भी है। अम्बरीष के ऊपर दुर्वासा ने ऐसा ही किया था; शङ्कर- दिग्विजय में आचार्य शङ्कर के ऊपर भी अभिचार किया गया था, इसका उल्लेख मिलता है; भाषा-रामायण के कर्त्ता श्री तुलसीदास के ऊपर भी किया गया था। आजकल भी कहीं-कहीं इसका अस्तित्व देखने को मिलता है। उक्त अर्थ में ही कोशों में भी 'कृत्या' का अर्थ मिलता है। पण्डित श्रीधर गणेश वाजे, बी० ए० कृत 'इंग्लिश मराठी डिक्शनरी' में 'कृत्या' का अर्थ ऐसा ही किया गया है—

'कृत्या वह स्त्री देवता है, जिसकी पूजा-बलि विनाश के लिये की जाती है। तान्त्रिक कृत्या विशेष कृत्या है। आजकल के नव-शिक्षित-गण इस कर्म पर विश्वास नहीं करते हैं, न इसकी सत्ता ही मानते हैं। इसी से प्रेरित होकर कृत्या के प्रतिपादन करनेवाले वैदिक सूत्रों का अर्थ आर्यसमाज के कई पंडितों ने असङ्गत एवं कल्पना-मूलक ही किया है। पण्डित श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ने तो निष्पक्ष-पात दृष्टि से अपने अथर्ववेद के सुबोध भाष्य में अपनी अनभिज्ञता इस विषय की स्वीकार की है और कहा है कि 'जो कोई विद्वान् इसे हमें बतायेंगे, हम सधन्यवाद स्वीकार करेंगे और प्रकाशित करेंगे।'

विशेषतः इस कर्म के करनेवाले शाबर तन्त्रों का आश्रय लेकर करते हैं। उन्हीं के पास इसकी क्रिया देखी गई है। यह एक प्रकार का आसुरी कर्म है। इसके करनेवाले को अधम बताया गया है। यह सृष्टि के प्रथम काल से ही होता आ रहा है। अतः इसकी निवृत्ति के उपाय वेद एवं तन्त्रों में बताये गये हैं। श्रीबगला एवं प्रत्यङ्गिरा शक्ति का अभ्यास इसके नष्ट करने के अमोघ उपाय हैं।

संक्षिप्त श्रीबगला-साधन

सत्सम्प्रदायानुसार पहले पहल साधक को गुरु से बगला मन्त्र का उपदेश ग्रहण कर, ब्रह्मचर्य-पूर्वक देवी-मन्दिर में, पर्वत-शिखर पर, शिवालय में, गुरु के समीप या जैसी सुविधा हो, पीताचार से मात्र मन्त्र का पुरश्चरण एक लक्ष जप-पूर्वक करना चाहिये। षट्-त्रिंशदक्षर मन्त्र का साधन ही प्रधान है। एकाक्षर स्थिरमाया, चतुरक्षर, अष्टाक्षर, नवाक्षर, हृदय, शताक्षर, पञ्चास्त्र मन्त्रों को क्रम से ग्रहण करके सहस्राक्षर मन्त्र पर्यन्त अभ्यास मन्त्र-सिद्धि की परम अवधि है। पञ्चाङ्ग, उपनिषद् का प्रतिदिन पाठ और नित्यार्चन-पद्धति से पूजन करना चाहिये। रुद्रयामलोक्त बृहत्पद्धति का अनुष्ठान तो आजकल बहुत कठिन और समय-साध्य है। होम के विषय में यद्यपि कृताकृत प्रसङ्ग है तथापि पूजाङ्ग-रूप से नित्य-होम का होना अत्यन्त सिद्धि-प्रद है।

इस घोर कलि-काल में श्री बगला के प्रयोग प्रत्यक्ष सिद्धि-प्रद हैं। इसीलिये तन्त्रों में इन्हें सिद्ध-विद्या कहा गया है। विशेषतः राज्याभियोग में अप्रतिम प्रभाव इनका देखा गया है। मुमुक्षु-गण तो काम, क्रोध आदि दुष्टों के स्तम्भन, कीलन एवं विनाश में ही इनका उपयोग करते हैं। काम के जीतने में भग-

वान् श्रीकृष्ण ने भी गीता (अ० ३ ।)में स्तम्भन का प्रयोग अर्जुन को बताया है—

> एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना ।
> जहि शत्रुं महाबाहो ! काम-रूपं दुरासदम् ॥

कुलाचार का पूजन, वीर-साधन, चक्रानुष्ठान-पद्धति भी इनकी उपलब्ध होती है । स्वगुरु के आचारानुसार इनका साधन करना चाहिये । सभी आचारों से बगला सिद्धि-प्रद देवता है ।

❀ ❀ ❀

प्रकृत श्रीबगला नित्यार्चन' श्रीबगला महाशक्ति की सर्वाङ्ग-पूर्ण पूजा-पद्धति है । यह पूजा-पद्धति एक सिद्ध महात्मा के पूजा-क्रम का निर्देश है । उन्होंने अपने साधना-जीवन में इसका सफल अनुष्ठान किया था, जिसके फलस्वरूप वे सभी शास्त्रों के पार-दर्शी होते हुये संगीत विद्या के सभी अङ्गों के प्रकृष्ट उन्नायक थे । उन्हें गन्धर्व-श्रेष्ठ की उपाधि भी प्राप्त थी । महाराष्ट्र देश के विदर्भ-प्रान्त में आप प्रकट हुये थे; दीक्षा का नाम अनन्तानन्दनाथ था । उन्हीं के द्वारा मुझे यह प्राप्त हुई थी । बहुत समय से श्रीपीताम्बरा-पीठ के पुस्तक-संग्रहालय में यह पद्धति रक्खी हुई थी । श्री भगवती के उपासकों की सुविधा के लिये इसे प्रकाशित करना उचित एवं उपयुक्त समझकर श्रीमान् शुक्ल जी से अनुमति लेकर 'साधनमाला' द्वारा साधकों के समीप इसे पहुँचा देना ही श्रेयस्कर समझकर यह कार्य किया गया है । आशा है, इससे साधक-समुदाय अपनी अभीष्ट-प्राप्ति करने में कृतकार्य होगा ।

कवच, शतनाम, कीलक एवं ब्रह्मास्त्र-विद्या कामवीज रत्नावली स्तोत्र भी श्री विद्या पीताम्बरा बगलामुखी के अलभ्य

स्तोत्र हैं। इन्हें 'श्री बगला कल्पतरु' में प्रकाशित किया गया है। इनके पाठ से श्री भगवती की कृपा अवश्य ही होती है।

श्री भगवती के अनेक प्रकार के अर्चन हैं, जो विभिन्न अवसरों पर किये जाते है। यह नित्यार्चन रोज का क्रिया है, जिसके अनुष्ठान से देवी-भाव की अभिव्यक्ति होती है। इसका अङ्ग होम एवं जप है, जो पद्धति में यथा स्थान निर्दिष्ट है। इस पद्धति के अनुसार उपासना करने से अवश्य ही सिद्धि होती है। इसका क्रम परशुराम-कल्पसूत्र के अनुसार नियत किया गया है। अतः पूर्ण प्रामाणिक पद्धति है।
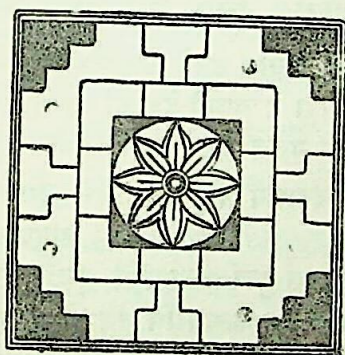
पहला उल्लास

प्रातः-कृत्यादि तर्पणान्त विवरण

ब्राह्म-मुहूर्त में उठकर अपने ब्रह्मरन्ध्र में संघट्ट-मुद्रा द्वारा—'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सखफ्रें ह्सक्षमलवरयूं सहखफ्रें सहक्षमलवरयीं हंसः सोहं ह्सौः स्हौः श्री अमुकाम्बा-सहित श्री अमुकानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः' से पूजन कर गुरुदेव का ध्यान करे। यथा—

सहस्र-दल-पङ्कजे सकल-देवता-रूपिणम् ।
स्मरेच्छिरसि हंसकं तदभिधान-पूर्वं गुरुम् ॥

ध्यान करने के वाद उनके चरणारविन्द से स्रवित होती हुई मकरन्द-सुधा-धारा से अपनी देह का अभिषिञ्चन कर मानसोपचारों से उनका यजन करे। यथा—

श्रीगुरु-पादुका-देवतायै लं पृथिव्यात्मकं गन्धं कल्पयामि नमः।
(अंगुष्ठ-कनिष्ठा से),
हं आकाशात्मकं पुष्पं कल्पयामि नमः (अंगुष्ठ-तर्जनी),
यं वाय्वात्मकं धूप कल्पयामि नमः (अंगुष्ठ-मध्यमा),
रं तेजसात्मकं दीपं कल्पयामि नमः (अंगुष्ठानामिका),
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं कल्पयामि नमः(अंगुष्ठ-मध्यमानामिका),
सं सर्वात्मकं ताम्बूलं कल्पयामि नमः (सर्वांगुलियों से)

इस प्रकार पूजन कर निम्न श्लोक से गुरुदेव की स्तुति कर उन्हें प्रणाम करे—

नमोऽस्तु गुरवे तस्मै स्वेष्ट-देवी-स्वरूपिणे ।
यस्य वागमृतं हन्ति विषं संसार-संज्ञकम् ।।

अब मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र तक उल्लास करनेवाली कुण्ड-लिनी-मयी मूल-विद्या का ध्यान कर उसके प्रभा-पटल से अपने शरीर को व्याप्त समझे। ध्यान—

प्रसन्न-वदनाम्भोजामुत्फुल्ल-नयनांचलाम् ।
पीत-वस्त्र-परीधानां पीत-कंचुकि-शोभिताम् ।।१।।
बालारुण-सु-ताम्रौष्ठीं पीत-गन्धानुलेपनाम् ।
हार-ग्रैवेय-काञ्चीभिर्मुक्ता-माला-विराजितां ।।२।।
मणि-नूपुर-शोभाढ्यामनेक -रत्न संयुताम् ।
दिव्य-रत्न-समायुक्तां दिव्य-माणिक्य-भूषितां ।।३।।
ताम्बूल-पूरित-मुखीं नाना-मौक्तिक-शोभितां ।
अनेक-रत्न-ज्योतिश्च शिरो-माला-विभूषितां ।।४।।
कुच-द्वय-समृद्धांगीं नितम्बेन विराजितां ।
मुक्ता-लता-युत-श्रोणीमुद्यदादित्य-सन्निभाम् ।।५।।

इस प्रकार ध्यान कर यथा-शक्ति मूल-विद्या 'ह्लीं' का जप करे। तदनन्तर मूल का १०८ या १० बार जप करे। फिर—'अनेन जपेन श्रीगुरु-देवता प्रीयताम्' इस मन्त्र से जप समर्पण कर प्रातः-स्मरणादि स्तोत्रों से गुरु की स्तुति कर योनि-मुद्रा से प्रणाम करे और 'सोहं' का उच्चारण करते हुये भूमि की प्रार्थना करे। यथा—

समुद्र-मेखले देवि ! पर्वत-स्तन-मण्डले ।
विष्णु-पत्नि! नमस्तुभ्यं पाद-स्पर्शं क्षमस्व मे ।।

तदनन्तर श्वासानुसार पैर बढ़ाकर बाहर निकले और आवश्यक क्रियाओं से निवृत्त होकर आचमन के बाद—ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं यक्ष-सेनाधिपतये मणिभद्राय किलि किलि स्वाहा' इस मन्त्र से विहित दन्त-काष्ठ को अभिमन्त्रित कर मूल से दाँतों का शोधन कर—'ॐ सर्व-तत्व-वशं-करि स्वाहा' से मुख धोकर सामग्री सहित जलाशय को जाये। वहाँ अस्त्र-मन्त्र (फट्) से प्रक्षालित तीर पर स्नानीय को रखकर वैदिक स्नान करे। फिर तान्त्रिक स्नान करे। यथा—

'ऐं आत्म-तत्वाय स्वाहा, ह्रीं विद्या-तत्वाय स्वाहा, श्रीं शिव-तत्वाय स्वाहा'—इन मन्त्रों से तीन बार आचमन कर मूल से प्राणायाम करे। तदनन्तर—'श्री बगलामुखी-देवता-प्रीतये स्नानमहं करिष्ये'—यह सङ्कल्प कर जल में त्रिकोण-मण्डल बनाकर सूर्य-मण्डल में दिव्य भूषणों से विभूषित देवी का ध्यान करे और उसके पादोदक को 'क्रों' से अंकुश-मुद्रा द्वारा त्रिकोण-मण्डल में आवाहित कर कवच—'हुं' से अवगुंठन, अस्त्र—'फट्' से संरक्षण और 'वं' से धेनु-मुद्रा द्वारा अमृतीकरण करे। फिर षडङ्ग कर मूल का जप करते हुये कलश से तत्व-मुद्रा द्वारा अपने सिर पर प्रोक्षण कर आचमन करे। तब—'मूलं श्रीबगला-मुखीं तर्पयामि नमः' से तीन बार तर्पण कर गीले वस्त्र उतारकर धौत-वस्त्र या पीत वस्त्र धारण कर आसन पर बैठे और तिलक * लगाकर वैदिकी सन्ध्या कर तान्त्रिकी सन्ध्या करे।—

---

* गृहीत्वा चन्दनं पीतं ततो वाम-तले न्यसेत्।
कनिष्ठिकया च संलिख्य त्रिकोणं यन्त्रमुत्तमम्॥
वृत्तं षट्कं चतुर्युक्तं मूल-मन्त्रेण योजयेत्।
त्रि-सप्त वाष्टमादिश्य तेन वश्यं भवेज्जगत्॥

'ऐं आत्म-तत्वाय स्वाहा, ह्लीं विद्या-तत्वाय स्वाहा, श्रीं शिव-तत्वाय स्वाहा' से आचमन कर प्राणायाम करे। फिर—'श्रीबगलामुखी-प्रीतये मन्त्र-सन्ध्यामहं करिष्ये' से सङ्कल्प कर ऋष्यादि-न्यास करे। यथा—नारद-ऋषये नमः शिरसि, त्रिष्टुप्छन्दसे नमो मुखे, श्रीबगलामुखी-देवतायै नमो हृदये, ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये, स्वाहा शक्तये नमो पादयोः, ॐ कीलकाय नमः सर्वांगे।

षडङ्ग-न्यास—ह्लां हृदयाय नमः, ह्लीं शिरसे स्वाहा, ह्लूं शिखायै वषट्, ह्लैं कवचाय हुं, ह्लौं नेत्र-त्रयाय वौषट्, ह्लः अस्त्राय फट्।

कर-न्यास—ह्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः, ह्लीं तर्जनीभ्यां नमः, ह्लूं मध्यमाभ्यां नमः, ह्लैं अनामिकाभ्यां नमः, ह्लौं कनिष्ठाभ्यां नमः, ह्लः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

धेनु-मुद्रा से जल का अमृतीकरण कर उस जल को दाहनी हथेली में लेकर उसे बायें हाथ से ढँककर उसे मूलमन्त्र से तीन बार अभिमन्त्रित करे और वाम तत्व-मुद्रा से शिर, पैरों और वक्ष का मूल से अलग-अलग मार्जन कर अवशिष्ट जल को बाईं नासिका से लगाकर उसे इडा से आकृष्ट करते हुये देह के भीतर स्थित कलुष को धोकर दाईं नासिका से उसका विरेचन करते हुये अपनी बाईं ओर कल्पित ज्वलद्-वज्र-पाषाण पर—'ॐ ह्लः अस्त्राय फट्' से फेंक दे। फिर अर्क-मण्डल में देवी का ध्यान कर—'ॐ ह्लीं बगलामुखि विद्महे दुष्ट-स्तम्भिनि धीमहि तन्नो शक्तिः प्रचोदयात्' से देवी को तीन बार अर्घ्य देकर मूल का २८ बार और गायत्री का दश बार जप करे।

तदनन्तर—'ॐ ह्रां ह्रीं हंसः श्रीसूर्यायेदमर्घ्यं नमः' से तीन बार अर्घ्य देकर सूर्य को प्रणाम करे। (अथवा भूमि पर चतुरस्र बनाकर 'नमः' से उसकी पूजा कर उसमें एक ताम्र-पात्र रखे। फिर उसके मध्य में गन्धादि से अष्टदल लिखकर पर्वादि में

इन्द्रादि अष्ट ग्रहों की पूजा कर और उसके मध्य में अर्क-मण्डल में 'ह्रां ह्रीं हंसः' मन्त्र से अर्क की पूजा कर 'ह्रीं हंसः सूर्य-मण्डलाय नमः' से तीन बार अर्घ्य देकर श्री सूर्यदेव को प्रणाम करे।) तब हाथ में जल-पात्र लेकर घर जाय और सन्ध्योत्तर तर्पण करे।

अब तान्त्रिक तर्पण करे। यथा—आचमन और प्राणायाम कर—'श्रीबगलामुखी-प्रीतये तान्त्रिक-तर्पणमहं करिष्ये'—यह सङ्कल्प करे और अपने सामने जल में त्रिकोण की परिकल्पना कर उसके मध्य में इष्ट-देवता का आवाहन तथा ध्यान कर निम्न मन्त्रों से ३-३ बार तर्पण करे। प्रत्येक तर्पण-वाक्य के प्रारम्भ में 'ॐ ह्लीं' की योजना कर ले—

अस्त्र-विद्या-दातारं गुरुं तर्पयामि नमः, स्तम्भनादि-विद्या दातारं गुरुं त०, ब्रह्मानन्दनाथ-गुरुं त०, विश्वकसेनानन्दनाथ-गुरुं त०, शिवानन्दनाथ गुरुं त०, त्रं तोतलाम्बां त०, स्त्रीं तारिण्यम्बां त०, बगलामुखीं त०, शीं शीतलां०, श्रीं मनोन्मनीं त०, वीं वैं वैखरीं त०, खां खें खेचरीं त०, क्रीं कालीं त०, बगला-मुखीं त०, जीव-दातारं पितरं त०, पितामहं त०, प्रपितामहं त०, वृद्ध-प्रपितामहं त०, गोत्रजाँस्तर्प०, स्तन्य-दात्रीं मातरं त०, पिता-महीं त०, प्रपितामहीं त०, वृद्ध-प्रपितामहीं त०, मातामहं त०, प्रमातामहं त०, वृद्ध-प्रमातामहं त०, मातामहीं त०, प्रमातामहीं त०, वृद्ध-प्रमातामहीं त०, सुमुखीं त०, ह्लौः भैरवीं त०, छां छीं छिन्नमस्तां त०, ऐं क्लीं सौः बालां त०, सौः भार्गवेशीं त०, दुं दुर्गां त०, ह्रीं भवानीं त०, क्रीं भ्रीं भ्रों भद्रकालीं त०, क्लीं शाम्भवीं त०, श्रीं महामायां त०, वैं वैन्दनेश्वरीं त०, गं गणेशं त०, वं वरुणं त०, श्रीं श्रीदं त०, धीं धर्मराजं त०, बगलामुखीं साङ्गां सपरिवारां त०।

तब २-३ बार आचमन व प्राणायाम कर—'ॐ ह्रीं हंसः' से सूर्य को तीन बार अर्घ्य देकर भास्कर देव को प्रणाम करे।

दूसरा उल्लास

द्वार-पूजादि मातृका-न्यासान्त विवरण

पूजा-गृह में आकर पहले द्वार-पूजा करे। यथा—द्वार के ऊपरी भाग में 'ॐ द्वार-श्रियै नमः', कोनों में 'गं गणेशाय नमः, सं सरस्वत्यै नमः', शाखाओं में 'धां धात्रे नमः, विं विधात्रे नमः' और देहली में 'दें देहल्यै नमः' से पूजा करे। फिर वामाङ्ग-संकोच-पूर्वक दाहने पैर से भीतर प्रवेश करे। वहाँ नैर्ऋत्य में—'वां वास्त्वधि-पतये ब्रह्मणे नमः', ईशान में 'दीं दीपानाथाय नमः' से पूजन कर भैरव की अनुमति के लिये प्रार्थना करे—

तीक्ष्ण-दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त-दहनोपम !

भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥

तदनन्तर आसन-स्थान का मूल से वीक्षण, अस्त्र—'फट्' से प्रोक्षण, 'फट्' से संरक्षण, 'फट्' से दर्भों द्वारा सन्ताडन और 'हूँ' से अवगुण्ठन कर आसन को स्पर्श कर कहे—

पृथ्वि! त्वया धृता लोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता ।

त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु चासनम् ॥

फिर 'ॐ ह्लीं आधार-शक्ति-कमलासनाय नमः' से आसन की पूजा कर उस पर बैठे और अपनी बाईं ओर—'गुरुभ्यो नमः', दाहिनी ओर 'गणपतये नमः' और आगे 'देव्यै नमः' से प्रणाम कर आचमन करे। फिर प्राणायाम कर भूत-शुद्धि करे।—

मूल से तीन बार छोटिका द्वारा चुटकी बजाते हुये दश-दिग्बन्धन करे। फिर पैर से जानु तक—'पृथ्वी-मण्डलं लं-बीज-युक्तमप्सु संहरामि', जानु से नाभि तक—'वरुण-मण्डलं वं-वीज-युक्तं वह्नौ संहरामि', नाभि से हृदय तक—'वह्नि-मण्डलं रं-बीज-युक्तं वायौ संहरामि', हृदय से भ्रूमध्य तक—'वायु-मण्डलं यं-वीज-युक्तमाकाशे संहरामि', भ्रू-मध्य से ब्रह्मरन्ध्र तक—आकाश-मण्डलं हं-बोज-युक्तमहङ्कारे संहरामि; अहं-तत्वं महत्तत्वे, महत्तत्वंप्रकृतौ, प्रकृतिं ह्लीं इति मायां पर-ब्रह्मणि संहरामि'—इन मन्त्रों से प्रविलापन कर मूलाधार से कुण्डलिनी को उठाकर हृदय में जीवात्मा से मिलावे और ब्रह्म-रन्ध्रस्थ परमात्मा से योजित कर वहीं पृथिव्यादि तत्त्वों को संयोजित करे। अब बाईं कुक्षि में पाप-पुरुष का ध्यान करे। यथा—

ब्रह्म-हत्या-शिरः-स्कन्धं स्वर्ण-स्तेय-भुज-द्वयम् ।
उप-पातक-रोमाणं रक्त-श्मश्रु-विलोचनम् ॥
सुरा-पान-हृदा-युक्तं गुरु-तल्प-कटि-द्वयम् ।
तत्संसर्गि पद-द्वन्द्वमङ्ग-प्रत्यङ्ग-पातकम् ॥
अचेतनमधो-वक्त्रं गन्ध-पादप-सन्निभम् ।
खड्ग-चर्म-धरं क्रुद्धं वाम-कुक्षौ विचिन्तयेत् ॥

इसके बाद 'यं रं वं' से क्रमानुसार प्राणायाम द्वारा शोषण, दाहन और प्लावन करे अर्थात् 'यं' के षोडश बार जप-पूरक द्वारा पाप-पुरुष का शोषण कर 'रं' के ६४ बार जप-कुम्भक से उसे दग्ध मानकर 'वं' के ३२ बार जप-रेचक से प्लावन कर 'वं' वीज के पूरक १, कुम्भक ४, रेचक २ जप से दृढ़ीकृत्य सावयव पुण्य-पुरुष की विभावना करे।

अब हृदय पर हाथ रखकर निम्न मन्त्र से प्राण-प्रतिष्ठा करे—आं ह्रीं क्रों यं······हं हौं हंसः मम प्राणा इह प्राणाः आं

ह्लीं क्रों यं......हं हौं हंसः मम जीव स्थितः, आं ह्लीं क्रों यं......हं हौं हंसः मम सर्वेन्द्रियाणि, वाङ्-मनश्चक्षुः-श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

इस प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र का लेलिहान मुद्रा से तीन बार जप करे।

तदनन्तर स्वरों से पूरक, 'क' से 'म' तक के वर्णों से कुम्भक और 'य' से 'क्ष' तक के वर्णों से रेचक—इस क्रम से तीन प्राणायाम कर कृताञ्जलि हो मातृका-न्यास करे। यथा—

विनियोग—अस्य श्रीमातृका-न्यास-मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमातृका-सरस्वती देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, बिन्दवः कीलकं, श्रीबगलाराधनत्वेन विनियोगः।

ध्यान—

पञ्चाशदक्षर - विनिर्मित - देह - यष्टि ।
भालेक्षणं धृत - हिमांशु - कलाभिरामाम् ॥
मुद्राक्ष - सूत्र-मणि-पुस्तक - शोभि-हस्तां ।
वर्णेश्वरीं नमत कुन्द - हिमांशु - गौरीम् ॥

शिरो-वदन-हृदय-गुह्य-पाद-सर्वाङ्ग में दाहिनी तत्व-मुद्रा से ऋष्यादि का न्यास कर कराङ्ग-न्यास करे—ॐ ह्लीं अं कं-५ आं ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्लीं इं चं-५ ईं ह्लीं तर्जनी०, ॐ ह्लीं उं टं-५ ऊं ह्लीं मध्यमा०, ॐ ह्लीं एं तं-५ ऐं ह्लीं अनामिका०, ॐ ह्लीं ओं पं-५ औं ह्लीं कनिष्ठिका०, ॐ ह्लीं अं यं......हं लं क्षं अः ह्लीं करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

इसी प्रकार षडङ्ग-न्यास करे।

अन्तर्मातृका-न्यास इस क्रम से करे—कण्ठ में स्वरों से, हृदय में 'क' से 'ठ' तक, नाभि में 'ड' से 'फ' तक, लिङ्ग में 'ब' से 'ल' तक, मूलाधार में 'व' से 'स' तक और भ्रू-मध्य में 'ह क्ष' से। 'ॐ ह्लीं अं नमः'—इस क्रम से सर्वत्र न्यास करे।

अं नमो ललाटे, आं नमो मुख-वृत्ते, इं नमो दक्ष-नेत्रे, ईं नमो वाम-नेत्रे, उं नमो दक्ष-कर्णे, ऊं नमो वाम-कर्णे, ऋं नमो दक्ष-नासा-पुटे, ॠं नमो वाम-नासा-पुटे, लृं नमो दक्ष-गण्डे, ॡं नमो वाम-गण्डे, एं नमो ऊर्ध्वोष्ठे, ऐं नमोऽधरोष्ठे, ओं नमो ऊर्ध्व-दन्त-पंक्तौ, औं नमो अधोदन्त-पंक्तौ, अं नमो ब्रह्म-रन्ध्रे, अः नमो जिह्वायाम्। कं नमो दक्ष-बाहु-मूले, खं नमो दक्ष-कूर्परे, गं नमो दक्ष-मणि-बन्धे, घं नमो दक्ष-करांगुलि-मूले, ङं नमो दक्ष-करांगुल्यग्रे, चं नमो वाम-बाहु-मूले, छं नमः वाम-कूर्परे, जं नमः वाम-मणि-बन्धे, झं नमः वाम-कर-तले, ञं नमो वाम-करांगुल्यग्रे, टं नमो दक्ष-पाद-मूले, ठं नमो दक्ष-जानुनि, डं नमो दक्ष-पाद-गुल्फे, ढं नमो दक्ष-पादांगुलि-मूले, णं नमो दक्ष-पादांगुल्यग्रे, तं नमो वाम-पाद-मूले, थं नमो जानुनि, दं नमो वाम-पाद-गुल्फे, धं नमो वाम-पादांगुलि-मूले, नं नमो वाम-पादांगुल्यग्रे, पं नमो दक्ष-पार्श्वे, फं नमो वाम-पार्श्वे, बं नमः पृष्ठे, भं नमो नाभौ, मं नमो जठरे, यं नमो हृदये, रं नमो दक्ष-स्कन्धे, लं नमो वाम-स्कन्धे, वं नमः ककुदि, शं नमो हृदयादि-दक्ष-कराग्रान्तं, षं नमो हृदयादि-वाम-कराग्रान्तं, सं नमो हृदयादि-दक्ष-पादान्तं, हं नमो हृदयादि-वाम-पादाग्रान्तं, लं नमो हृदयादि-उदरान्तं, क्षं नमो हृदयादि-मुखान्तं।

तीसरा उल्लास

मूल-विद्या-न्यासादि जपान्त विवरण

मूल-विद्या-न्यास—पहले सङ्कल्प करे। यथा—श्रीबगला-मुखी-प्रीतये तन्मूल-न्यासमहं करिष्ये।

विनियोग—अस्याः श्रीब्रह्मास्त्र-विद्या-बगलामुख्या श्रीनारद ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्रीबगलामुखी देवता, ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ॐ कीलकं, श्रीबगलामुखी-देवता-प्रसाद-सिद्धयर्थे न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—श्रीनारद-ऋषये नमः शिरसि। त्रिष्टुप्-छन्दसे नमो मुखे। श्रीबगलामुखी-देवतायै नमो हृदये। ह्लीं-बीजाय नमो गुह्ये। स्वाहा-शक्तये नमः पादयोः। ॐ-कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। श्रीबगला-मुखी-देवता-प्रसाद-सिद्धयर्थे न्यासे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कराङ्ग-न्यास—ह्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः, ह्लीं तर्जनीभ्यां नमः, ह्लूं मध्यमाभ्यां नमः, ह्लैं अनामिकाभ्यां नमः, ह्लौं कनिष्ठिका-भ्यां नमः, ह्लः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग-न्यास—ह्लीं हृदयाय नमः, बगलामुखि शिरसे स्वाहा, सर्व-दुष्टानां शिखायै वषट्, वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुं, जिह्वां कीलय नेत्र-त्रयाय वौषट्, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

अक्षर-न्यास—ॐ नमः शिरसि, ह्लीं नमो ललाटे, बं नमो भ्रू-युगे, गं नमो दक्ष-नेत्रे, लां नमो वाम-नेत्रे, मुं नमो दक्ष-कर्णे, खिं नमो वाम-कर्णे, सं नमो दक्ष-नासायां, वँ नमो वाम-नासायां, दुं नमो दक्ष-गण्डे, ष्टां नमो वाम-गण्डे, नां नयः ऊर्ध्वोष्ठे, वां नमः अधरोष्ठे, चं नमो मुखे, मुं नमश्चिबुके, खं नमो गले, पं

नमो दक्ष-बाहु-मूले, दं नमो दक्ष-कूर्परे, स्तं नमो दक्ष-मणि-बन्धे, भं नमो दक्ष-करांगुलि-मूले, यं नमो दक्ष-करांगुल्यग्रे, जिं नमो वाम-बाहु-मूले, ह्वां नमो कूर्परे, कीं नमो वाम-मणि-बन्धे, लं नमो वाम-करांगुलि-मूले, यं नमो वाम-करांगुल्यग्रे, बुं नमो दक्षोरु-मूले, द्धिं नमो दक्ष-जानुनि, विं नमो दक्ष-गुल्फे, नां नमो दक्ष-पादांगुलि-मूले, शं नमो दक्ष-पादांगुल्यग्रे, यं नमो वाम-पाद-मूले, ह्लीं नमो वाम-जानुनि, ॐ नमो वाम-गुल्फे, स्वां नमो वाम-पादांगुलि-मूले, हां नमो वाम-पादांगुल्यग्रे ।

आरोह-न्यास—ॐ ह्लीं शिरसि, बगलामुखि ललाटे, सर्व-दुष्टानां मुखे, वाचं हृदये, मुखं उदरे, पदं नाभौ, स्तम्भय कट्यां, जिह्वां लिङ्गे, कीलय आधारे, बुद्धिं ऊर्वोः, विनाशय जान्वोः, ह्लीं जङ्घयोः, ॐ गुल्फयोः, स्वाहा पादयोः ।

अवरोह-न्यास—ॐ ह्लीं पादयोः, बगलामुखि गुल्फयोः, सर्व-दुष्टानां जङ्घयोः, वाचं जान्वोः, मुखं ऊर्वोः, पदमाधारे, स्तम्भय लिङ्गे, जिह्वां कट्यां, कीलय नाभौ, बुद्धिं उदरे, विनाशय हृदये, ह्लीं मुखे, ॐ ललाटे, स्वाहा मूर्ध्नि ।

सृष्टि-न्यास—ॐ शिरसि, ह्लीं ललाटे, वं गं भ्रुवोः लां भ्रू-मध्ये, मुखि नेत्रयोः, दुष्टां कपोलयोः, नां मुखे, वाचं नासा-पुटयोः, मुखमोष्ठयोः, पं चिबुके, दं कण्ठे, स्तम्भय स्कन्धयोः, यं हृदि, जिह्वां भुजयोः, कीलं करयोः, यं उदरे,बुद्धिं कुक्षौ, विं कट्यां, नां लिङ्गे, शं यं ऊर्वोः, ह्लीं जान्वोः, ॐ जङ्घयोः, स्वाहां पादयोः ।

संहार-न्यास—ॐ पादयोः, ह्लीं जङ्घयोः, वं गं जान्वोः, लां मुं ऊर्वोः, मुखि लिङ्गे, सर्वं कट्यां, दुष्टां कुक्षौ, नां उदरे, वाचं करयोः, मुखं भुजयोः, पं नाभौ, दं हृदि, स्तम्भं स्कन्धयोः, यं कण्ठे, जिह्वां ओष्ठयोः, कीलं नासा-पुटयोः, यं मुखे, बुद्धिं कपो-

लयोः, विं कर्णयोः, नां नेत्रयोः, शं भ्रू मध्ये, यं ह्लीं ॐ भ्रुवोः, स्वां ललाटे, हाँ शिरसि ।

तत्व-न्यास—ॐ ह्लीं आत्म-तत्व-व्यापिन्यै श्रीबगलामुख्यै नमो मूलाधारे । ॐ ह्लीं विद्या-तत्व-व्यापिन्यै श्रीबगलामुख्यै नमो हृदये । ॐ ह्लीं शिव-तत्व-व्यापिन्यै श्रीबगलामुख्यै नमः कण्ठे, ॐ ह्लीं सर्व-तत्व-व्यापिन्यै श्रीबगलामुख्यै नमो ब्रह्म-रन्ध्रे ।

मूल से तीन बार व्यापक न्यास कर ध्यान करे । यथा—

गम्भीरां च मदोन्मत्तां तप्त-काञ्चन-सम-प्रभाम् ।
चतुर्भुजां त्रि - नयनां कमलासन - संस्थिताम् ।।
मुद्गरं दक्षिणे पाशं वामे जिह्वां च वज्रम् ।
पीताम्बर - धरां सान्द्र - दृढ - पीन - पयोधराम् ।।
हेम - कुण्डल- भूषां च पीत - चन्द्रार्ध - शेखराम् ।
पीत - भूषण - भूषाङ्गीं स्वर्ण - सिंहासने स्थिताम् ।।
एवं ध्यात्वा महा-देवीं शत्रु - स्तम्भन - कारिणीम् ।
महा-विद्यां महा-मायां साधकेष्ट - फल - प्रदाम् ।।

ध्यान कर चुकने पर—'श्रीबगलामुखी-देवतायै लं पृथिव्यात्मकं गन्धं कल्पयामि नमः' इत्यादि क्रम से पञ्च-तत्व-बीजों से मानस पूजा कर—'ॐ ह्लीं कुल्लकाय नमो मूर्ध्नि । ॐ सेतवे नमो हृदये । ॐ ह्लीं महा-सेतवे नमः कण्ठे । ॐ भ्रं मूलं ऐं ॐ निर्वाणाय नमो नाभौ । ॐ ह्रीं जूं सः काल-मूर्तिः काल-प्रबोधिनि कालातीते काल-दायिनि कपाल-पात्र-धारिणि मारिणि ॐ ह्रीं जूं सः वं सोहं हंसः स्वाहा कुलिन्यै नमो मूलाधारे ।

क्लीं स्पर्श-सुन्दर्यै नमः लिङ्गे । ॐ रां रीं रूं रमलवरयूं राकिन्यै नमः शिरसि । ॐ द्वि-जिह्वायै नमो हृदये । ॐ श्रीं ह्रीं हंक्षः मूलं सोहं ह्रीं क्ष्रीं ॐ—इति जीवनं । ॐ हं लं क्षं (सं) मूलं लं रं क्षं ॐ जाग्रदवस्था ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं...हं लं क्षं मूलं क्षं ॐ—इति सिद्ध-विद्या-शाप-विमोचनं ।

उक्त कुल्लुकादि विधानों से मन्त्र के संस्कार करे ।

अब माला को नमस्कार कर यथा-शक्ति जप करे। जप कर चुकने पर माला को पुनः नमस्कार करे और शिर में गुरु का, कण्ठ में मन्त्र का और पीत-वर्णा श्रीपीताम्बरा का हृदय में ध्यान करने के बाद निम्न प्रकार षडङ्ग-न्यास करे—

ह्लां हृदयाय नमः । ह्लीं शिरसे स्वाहा । ह्लूं शिखायै वषट् । ह्लैं कवचाय हुं । ह्लौं नेत्र-त्रयाय वौषट् । ह्लः अस्त्राय फट् ।

पुनः श्रीबगला का ध्यान कर जप का समर्पण करे । यथा—

गुह्यातिगुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्-कृतं जपम् ।
त्वत्प्रसादान्मे देवि ! सिद्धिर्भवतु महेश्वरि ॥

चौथा उल्लास

पात्रासादन

साधक अपने दाहिनी ओर गन्ध-पुष्पादि, बाईं ओर एक जल-कलश, दोनों ओर दीपक, पीछे कुल-द्रव्य और हाथ धोने के लिये एक पात्र रखे। फिर आचमन और प्राणायाम कर सङ्कल्प करे—ॐ तत्सदद्य सकल-निगमागमोक्त-फल-प्राप्त्यर्थं नवावरण-तरङ्गा-वरण-युक्तायाः श्रीबगलामुख्याः श्रीयन्त्र-पूजनमहं करिष्ये, तदङ्गत्वेन पात्रासादनं च करिष्ये।

अब अपने आगे विन्दु-त्रिकोण-षट्-कोण-वृत्ताष्टदल-वृत्त-षोडश-दल-वृत्तत्रय-चतुर्द्वारात्मक-भूगृह-त्रयात्मक यन्त्र पीठ के ऊपर स्थापित कर अपने बाईं ओर जल से चतुरस्र-मण्डल बनावे और मूल से पीतोपचारों अक्षतों द्वारा पूजन कर उसके ऊपर एक प्रक्षालित आधार रखे। 'ॐ वह्नि-मण्डलाय दश-कलात्मने नमः' से आधार पर पीत-गन्धादि से लिप्त और पीत-माल्य से विभूषित सौवर्णादि कलश को उस आधार पर स्थापित करे। फिर—'अं अर्क-मण्डलाय द्वादश-कलात्मने नमः' से कलश में पूजाकर 'मूल' द्वारा उसमें जल भरे और अंकुश-मुद्रा से सूर्य-मण्डल-स्थित तीर्थों का निम्न मन्त्रों से आवाहन करे---

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि, सरस्वति !
नर्मदे, सिन्धु, कावेरि! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

तदनन्तर---'ॐ सोम-मण्डलाय षोडश-कलात्मने नमः' से पूजन कर 'ह्सौः' से उसे सात बार अभिमन्त्रित कर उसमें वृत्त-त्रिकोण-षट्कोण-चतुरस्रात्मक यन्त्र की कल्पना कर मध्य में

'मूल' से त्रिकोणों में—'सं सत्वाय नमः, रं रजसे नमः, तं तमसे नमः' से; षट्-कोणों में—'ह्लां हृदयाय नमः, ह्लीं शिरसे स्वाहा, ह्लूं शिखायै वषट्, ह्लैं कवचाय हुं, ह्लौं नेत्र-त्रयाय वौषट्, ह्लः अस्त्राय फट्' से और चतुरस्त्र में—'काम-गिरि-पीठाय नमः, पूर्ण-गिरि-पीठाय नमः, उड्डीयान-पीठाय नमः, जालन्धर-पीठाय नमः' से पूजन कर 'अ' से 'क्ष' तक मातृकाओं से स्पर्श करे। तब उसमें देवी का ध्यान कर 'मूल' से उसे तीन बार अभिमन्त्रित करे और गन्धाक्षत-पुष्पों से उसकी पूजा कर धेनु-मुद्रा दिखाते हुये प्रणाम करे।

अब अपने दाईं ओर त्रिकोण-षट्कोण-वृत्त-चतुरस्त्र बनाकर गन्धाक्षतों से उसकी पूजा कर उस पर आधार रखकर उस पर 'रं वह्नि-मण्डलाय दश-कलात्मने नमः' से पूजा करे। फिर 'फट्' से प्रक्षालित, सुधूपित और गन्ध-लेपित शङ्ख को उस पर स्थापित कर—'अं अर्क-मण्डलाय द्वादश-कलात्मने नमः' से उसकी पूजा करे। फिर उसे कलश-जल द्वारा पूर्ण कर—'सं सोम-मण्डलाय षोडश-कलात्मने नमः' से उसकी पूजा-कर उसमें निम्न मन्त्र से देवी का आवाहन करे—

शरदिन्दु-मुखाम्भोजां पीत-गन्धानु-लेपनाम् ।
आवाहयामि देवेशि! शङ्ख-पात्रे सुशोभने ।।
सन्निधिं कुरु देवेशि ! सर्व-कार्यार्थ-सिद्धये ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बगलामुखि ! सर्व-दुष्टानां मुख-स्तम्भिनि ! सकल मनोहारिणि ! अम्बिके ! इहागच्छ सन्निधिं कुरु सर्वार्थं साधय साधय स्वाहा ॐ ह्रीं अम्बा-श्री-पादुकां पूजयामि नमः।

इस प्रकार आवाहन-पूजन कर शङ्ख की प्रार्थना करे। यथा-

पाञ्चजन्य, महा-नाद, ध्वस्त-पातक-सञ्चय !
त्राहि मां नरकाद् घोराद् देवी-मार्गं प्रदर्शय ।।

विष्णुना विधृतस्त्वं हि करे नित्यमतन्द्रितः ।
ध्वनिना ते विनश्यन्ति विघ्नानि च दिशो दश ॥
पाञ्चजन्य ! नमस्तेऽस्तु सर्व-कामांश्च वर्धय ॥

तदनन्तर पुष्प द्वारा उसके जल से अपने को और पूजा-सामग्री को प्रोक्षित कर तीन बार योनि-मुद्रा द्वारा उसे प्रणाम करे।

विशेषार्घ्य-स्थापन—अपने और देवी के बीच में बिन्दु-त्रिकोण-षट्कोण-वृत्त-चतुरस्र-मण्डल बनाकर 'मूल' से अक्षतों द्वारा पूजा-कर उस पर आधार स्थापित करे और 'मं वह्नि-मण्डलाय दश-कलात्मने नमः' से उसको पूजाकर उसमें अपने आगे से प्रदक्षिणा-क्रम से अग्नि की दश कलाओं को निम्न मन्त्रों से पूजा करे—यं धूम्रार्चिषे नमः, रं ऊष्मायै नमः, लं ज्वलिन्यै नमः, वं ज्वालिन्यै नमः, शं विस्फुल्लिङ्गिन्यै नमः, सं सुश्रियै नमः, सं सुरूपायै नमः, हं कपिलायै नमः, लं हव्यवाहायै नमः, क्षं कव्यवाहायै नमः।

तदनन्तर 'फट्' से प्रक्षालित पात्र को सुधूपित कर ताल-त्रय से दिग्बन्धन करते हुये उसे आधार पर रखे और—'अं अर्क-मण्डलाय द्वादश-कलात्मने नमः' से उसकी पूजा कर उसमें अपने आगे से प्रदक्षिण-क्रम से सूर्य की बारह कलाओं की निम्न मन्त्रों से पूजा करे—'कं भं तपिन्यै नमः, खं बं तापिन्यै नमः, गं फं धूम्रायै नमः, घं पं मरीच्यै नमः, ङं नं ज्वालिन्यै नमः, चं धं रुच्यै नमः, छं दं सुषुम्णायै नमः, जं थं भोगदायै नमः, झं तं विश्वायै नमः, ञं णं बोधिन्यै नमः, टं ठं धारिण्यै नमः, डं ढं क्षमायै नमः।

अब उसे निम्न मन्त्र द्वारा अमृत से पूर्ण करे—मूलं क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं ॡं ऌं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं।

फिर—'ॐ षोडश-कलात्मने सोम-मण्डलाय से नमः' पूजाकर अपने आगे से प्रदक्षिण-क्रम से चन्द्रमा की सोलह कलाओं की निम्न मन्त्रों से पूजा करे—अं अमृतायै नमः, आं मानदायै नमः, इं पूषायै नमः, ईं तुष्टचै नमः, उं पुष्ट्यै नमः, ऊं रत्यै नमः, ऋं धृत्यै नमः, ॠं शशिन्यै नमः, लृं चन्द्रिकायै नमः, ॡं कान्त्यै नमः, एं ज्योत्स्नायै नमः, ऐं श्रियै नमः, ओं प्रीत्यै नमः, औं अङ्गदायै नमः, अं पूर्णायै नमः, अः पूर्णामृतायै नमः।

प्रथमा-शोधन—परा-प्रासाद 'ह्लौः' बीज से पात्रस्थ अमृत को सात बार अभिमन्त्रित कर उसके मध्य में 'हलक्ष'-मण्डित 'अकथादि'-त्रिकोण की कल्पना करे। फिर 'यं' से शोषण, 'रं' से दाहन, 'वं' से अमृतीकरण, 'फट्' से संरक्षण, 'हुं' से अवगुण्ठन, 'मूल' से वीक्षण, 'नं' से अभ्युक्षण और 'स्वाहा' से अभ्यर्चन कर निम्न मन्त्रों का जप करे—

एकमेव परब्रह्म स्थूल - सूक्ष्म - मयं ध्रुवम्।
कचोद्भवां ब्रह्म-हत्यां तेन ते नाशयाम्यहम्॥
सूर्य - मण्डल - सम्भूते, वरुणालय - सम्भवे!
अमा-बीज-मये, देवि! शुक्र-शापाद् विमुच्यताम्॥
वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्द-मयं यदि।
तेन सत्येन ते देवि! ब्रह्म - हत्यां व्यपोहतु॥

वां वीं वूं वैं वौं वः ब्रह्म-शाप-विमोचितायै सुरा-देव्यै नमः। शां शीं शूं शैं शौं शः शुक्र-शाप-विमोचितायै सुरा-देव्यै नमः। क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः सुरे! कृष्ण-शापं विमोचयामृतं स्रावय स्रावय स्वाहा। ह्रीं श्रीं नमो भगवति, माहेश्वरि! सर्व-पशु-मनश्चक्षुस्तिरस्कारं कुरु कुरु स्वाहा।

द्वितीया-शोधन—'यं' से शोषण, 'रं' से दाहन, 'वं' से अमृतीकरण, 'हूँ' से अवगुण्ठन, फट् से संरक्षण, 'मूल' से वीक्षण, 'नं' से अभ्युक्षण और 'स्वाहा' से अभ्यर्चन कर 'मूल' से तीन बार अभिमन्त्रित करे।

इसी क्रम से तृतीया-चतुर्थी का भी शोधन करे। इसके बाद शक्ति को आसन पर बैठाकर पाद्यार्घ्याचमनीय देकर 'यं' इत्यादि से शोषणादि संस्कार करे और तब उसके शरीर में निम्न प्रकार न्यास करे—

दक्षोरौ देवीकोट-पीठाय नमः, वामोरौ नेपाल-पीठाय नमः, योनौ कामरूप-पीठाय नमः, नाभौ कानरूप-पीठाय नमः, स्तनयोः जालन्धर - पीठाय नमः, कण्ठे पूर्णगिरि-पीठाय नमः, भ्रू-मध्ये कामगिरि-पीठाय नमः, ब्रह्म-रन्ध्रे उड्डीयान-पीठाय नमः। ॐ ह्रीं भगमालिनि ! इमां शक्तिं पवित्री कुरु कुरु, मम शक्ति कुरु कुरु स्वाहा।

यदि शक्ति अदीक्षिता हो, तो उसके बाएँ कान में निम्न मन्त्र सुनावे—ॐ ह्रीं शान्तिरस्तु शुभं चास्तु प्रणश्यन्त्यशुभं च यत्। यत एवागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छति।

फिर गन्धाक्षत, सौभाग्य-द्रव्यों और पुष्पों से शक्ति की पूजा करे।

विशेषार्घ्य के मध्य में 'हसक्षमलवरयूं सुधा-देव्यै वौषट्' से आनन्द-भैरव और आनन्द-भैरवी के मिथुन-रूप का गन्धाक्षतों से पूजन करे और उस पर हाथ रख कर निम्नलिखित चतुर्नवति (९४) मन्त्रों से अभिमन्त्रित करे। प्रत्येक मन्त्र के अन्त में 'नमः' जोड़ ले। यथा—

अं निवृत्यै नमः, आं प्रतिष्ठायै०, इं विद्यायै०, ईं ईशान्यै०, उं इन्धिकायै०, ऊं दीपिकायै०, ऋं रेचिकायै०, ॠं मोचिकायै०, लृं परायै०, ॡं सूक्ष्मायै०, एं सूक्ष्मामृतायै०, ऐं ज्ञानामृतायै०, ओं आप्यायिन्यै०, औं व्यापिन्यै०, अं व्योम-रूपायै०, अः अनन्तायै०, कं सृष्ट्यै०, खं ऋद्ध्यै०, गं स्मृत्यै०, घं मेधायै०,

ङं कान्तायै०, चं लक्ष्म्यै०, छं धृत्यै०, जं स्थिरायै०, झं स्थित्यै०, ञं सिद्धयै०, टं जरायै०, ठं पालिन्यै०, डं शान्त्यै०, ढं ऐश्वर्यै०, णं रत्यै०, तं कामिन्यै०, थं वरदायै०, दं आह्लादिन्यै०, धं प्रीत्यै०, नं दीर्घाण्यै०, पं तीक्ष्णायै०, फं रौद्र्यै०, बं भयायै०, मं निद्रायै०, यं क्षुधायै०, रं क्रोधिन्यै०, लं क्रियायै०, वं उल्कायै०, शं मृत्यवे०, षं पीतायै०, सं श्वेतायै०, हं अरुणायै०, लं असितायै०, क्षं कपिलायै०। यं धूमार्चिषे०, रं उष्मायै०, लं ज्वलिन्यै०, वं ज्वालिन्यै०, शं विस्फुलिङ्गिन्यै०, षं सुश्रियै०, सं सुरूपायै०, हं कपिलायै०, लं हव्यवाहायै०, क्षं कव्यवाहायै०। कं भं तपिन्यै०, खं बं तापिन्यै०, गं फं धूम्रायै०, घं पं मरीच्यै०, ङं नं ज्वालिन्यै०, जं धं रुच्यै०, छं दं सुषमायै०, जं थं भोगदायै०, झं तं विश्वायै०, ञं णं बोधिन्यै०, टं ढं धारिण्यै०, ठं डं क्षमायै०। अं अमृतायै०, आं मानदायै०, इं पूषायै०, ईं तुष्ट्यै०, उं पुष्ट्यै०, ऊं रत्यै०, ऋं धृत्यै००, ॠं शशिन्यै०, ऌं चन्द्रिकायै०, ॡं कान्त्यै०, एं ज्योत्स्नायै०, ऐं श्रियै०, ओं प्रीत्यै०, औं अङ्गदायै०, अं पूर्णायै०, अः पूर्णामृतायै०।

दश ब्रह्म-कलाएँ

१ कं सृष्टि - कलायै नमः	६ चं लक्ष्मी - कलायै नमः	
२ खं ऋद्धि ,, नमः	७ छं द्युति ,, नमः	
३ गं स्मृति ,, नमः	८ जं स्थिरा ,, नमः	
४ घं मेधा ,, नमः	९ झं स्थिति ,, नमः	
५ ङं कान्ति ,, नमः	१० ञं सिद्धि ,, नमः	

दश विष्णु-कलाएँ

१ टं जरा-कलायै नमः। २ ठं पालिनी०। ३ डं शान्ति०। ४ ढं ईश्वरी०। ५ णं रति०। ६ तं कामिनी०। ७ थं वरदा०। ८ दं आह्लादिनी०। ९ धं प्रीति०। १० नं दीर्घा०।

दश रुद्र-कलाएँ

१ पं तीक्ष्णा-कलायै नमः, २ फं रौद्रा०, ३ बं भया०, ४ सं निद्रा०, ५ मं तन्द्रा०, ६ यं क्षुत्०, ७ रं क्रोधिनी०, ८ लं क्रिया०, ९ वं उद्गारि०, १० शं मृत्यु०।

चार ईश्वर-कलाएँ

१ षं पीता-कलायै नमः, २ सं श्वेता०, ३ हं अरुणा०, ४ लं असिता०।

सोलह सदाशिव-कलाएँ

१ अं निवृत्ति-कलायै नमः, २ आं प्रतिष्ठा०, ३ इं विद्या०, ४ ईं शान्ति०, ५ उं इन्धि०, ६ ऊं दीपि०, ७ ऋं रेचिका०, ८ ॠं मोचिका०, ९ लृं परा०, १० ॡं सूक्ष्मा०, ११ एं सूक्ष्मामृत०, १२ ऐं ज्ञान०, १३ ओं ज्ञानामृत०, १४ औं आप्यायिनी०, १५ अं व्यापिनी०, १६ अः व्योमरूप०।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसः शुचिषद् वसुरन्तरिक्ष सद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसद् । नृषद्वरसद् ऋत-सद्-व्योम-सदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् । ४ ब्रह्म-दश-कला श्रीपा० पू० । ४ ब्रह्मज-ज्ञानं प्रथमं पुरस्तात् विसीमतः सुरुचोवेन आवः सबुध्निया उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः । ४ उं विष्णु-दश-कला श्रीपा० पू०, ४ प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः । यस्योरुषु त्रि-विक्रमणेषु अधि-क्षियन्ति भुवनानि विश्वा, ४ मं रुद्र-दश-कला-श्रीपा० पू० । ४ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि-वर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् । ४ विन्द्वीश्वर-पञ्च-कला श्रीपा० पू० । ४ तद्-विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव-चक्षराततं । ४ तद्-विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते । विष्णोर्यत् परमं पदम् । ४ विन्दु-नाद-सदाशिव-षोडश-कला श्रीपा० पू० । ४

विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा-रूपाणि पिंशतु । आसिंचतु प्रजापति-र्धाता गर्भं दधातु मे । मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वौषधीः । गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति ! गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्कर-स्रजा । ४ सदा-शिव-षोडश-कला श्रीपा० पू० । ४ ऐं क्लीं सौः श्रीपीताम्बरा-कलायै नमः । अखण्डैक-रसानन्द-करे पर-सुधात्मनि ! स्वच्छन्द-स्फुरणामत्र निधेहि कुल-नायिके ! अकुलस्थामृताकारे शुद्ध-ज्ञान-करे परे ! अमृतत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्न-रूपिणि ! तद् रूपिण्यैकरस्थं त्वं कृत्वा ह्येतत्स्वरूपिणि ! भूत्वा परामृताकारा मयि चित्स्फुरणं कुरु । ह्रौं जुं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि! अमृत-वर्षिणि ! अमृतं स्रावय-स्रावय स्वाहा (ऐं ह्लीं श्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत-वर्षिणि अमृत-स्राविणि अमृतीकारिणि अमृतं स्रावय स्रावय अमृतं पूरय पूरय अमृतं देहि अमृतेश्वरि ! श्रीपा० ॐ जुं सः इत्यभिमन्त्र्य) मूलं ६४ ।

उक्त मन्त्रों से अभिमन्त्रित कर गन्धाक्षतों से पूजन कर मत्स्य-कूर्म-योनि-मुद्राएँ दिखाता हुआ प्रणाम करे ।

विशेष और सामान्यार्घ्य के मध्य में वृत्त-चतुरस्र मण्डल बनाकर उसमें (१) गुरु, (२) भैरव, (३) शक्ति, (४) भोग, (५) आत्मा, (६) बलि—इन छः पात्रों को स्थापित कर विशेषार्घ्यामृत से उन्हें पूर्ण करे । फिर मूल से उन्हें अभिमन्त्रित कर गन्धाक्षतों से पूजा कर प्रणाम करे । यह सम्भव न हो, तो विशेष पात्र से ही सारे कर्म करे । एक कलश-जल से ही पाद्यार्घ्याचमनीय-पात्रादिकों से सब कर्म करना चाहिये ।

पाँचवाँ अध्याय

अन्तर्यागादि मूल-देवी-पूजा

अन्तर्याग—किसी दूसरे पात्र में या आत्म-पात्र ही में विशेषार्घ्य-द्रव्यामृत लेकर वाम-तत्त्व-मुद्रा से द्वितीय खण्ड या आर्द्र-खण्ड या पुष्प ग्रहण करे और दक्ष ज्ञान-मुद्रा से गुरु-पादुका मन्त्र का उच्चारण कर 'तर्पयामि नमः' से शिर पर तीन बार गुरु का तर्पण कर 'मूलं श्रीबगलामुखी-पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः' से हृदय में तीन बार तर्पण कर 'ॐ ह्लीं बगलामुखि ! सर्व-दुष्टानां आत्म-तत्वेन स्थूल-देहं शोधयामि जुहोमि स्वाहा, वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय विद्या-तत्वेन सूक्ष्म-देहं शोधयामि जुहोमि स्वाहा, बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा शिव-तत्वेन कारण-देहं शोधयामि जुहोमि स्वाहा' से तत्व-त्रय का संशोधन करे। इस प्रकार समस्त बन्धनों से मुक्त होकर सशक्ति गुरु-देवता से अपने ऐक्य का चिन्तन करे।

बहिर्याग—सामान्यार्घ्य जल से पीठ का अभ्युक्षण कर बहिर्याग प्रारम्भ करे। पहले पीठ-पूजा करे। प्रत्येक मन्त्र के आदि में 'ॐ' और अन्त में 'नमः' जोड़ ले। यथा—

'ॐ आधार-शक्तये नमः, कूर्मासनाय, अनन्ताय, पृथिव्यै, अमृतार्णवाय, रत्न-द्वीपाय, नन्दन-वनाय, कूजत्-कोकिल-शुक-सारिकाभ्यो, कल्प-कदम्ब-वृक्षाय, दिव्य-प्रासादाय, मणि-मण्डपाय, अनर्घ-सिंहासनाय, प्रसून-तूलिकायै, सर्वाश्चर्या-सेवकादिभ्यो, कामिन्यै, कामदायै, गङ्गायै, यमुनायै, गौर्यै, चिच्छक्त्यै, माया-शक्त्यै, जयायै, विजयायै, धात्र्यै, विधात्रे, निवृत्यै, प्रवृत्यै, पद्मायै,

पद्म-निधये, बलायै, वागीश्वर्यै, विद्यायै, शङ्खिन्यै, श्रियै, हंसायै, पर-हंसायै, कालाय, वैराग्याय, नन्दाय, परमात्मने, उत्तराय, अनुत्तराय, आधारादि-समस्त-पीठ-देवताभ्यो ।

पीठ के ऊपर सिद्धि-सुसाधित यन्त्र को स्थापित कर उसमें देवी का आवाहन करे। यथा—ऐं ह्रीं श्रीं आधाराय नमः, आधार-शक्ति-कमलासनाय नम.' से यन्त्रान्तर्गत त्रिकोण में पूजा कर श्वासानुसार पुष्पाञ्जलि लेकर आधार-शक्ति-निलया महा-शक्ति-स्वरूपिणी भगवती का उसमें वाम-नाड़ी से मन्त्र द्वारा महोज्ज्वल पूजा-पीठ पर आवाहनी मुद्रा दिखाकर निम्न मन्त्र पढ़कर आवाहन करे—

मूलं नित्ये बगलामुखि ! एहि एहि मण्डल-मध्ये अवतर अवतर, सान्निध्यं कुरु कुरु स्वाहा, महा-पद्म-वनान्तस्थे कारणा-नन्द-विग्रहे ! सर्व-भूत-हिते मातरेहि एहि परमेश्वरि ! देवेशि, भक्ति-सुलभे, परिवार-समन्विते! यावत् त्वं पूजायिष्यामि, तावत् त्वं सुस्थिरा भव ।

पात्र को पुष्पांजलि अर्पित कर आवाहनी, संस्थापिनी, सन्निधापिनी, सन्निरोधिनी, सम्मुखीकरणी, अवगुण्ठनी, सकली-करणी, परमीकरणी और अमृतीकरणी मुद्राएँ दिखावे। फिर 'ह्लीं' बीज से षोडशोपचार-पूजन करे । यथा—

ह्लीं श्रीं बगलामुखि! एतत् तवासनं नमः स्वागतं सुस्वागतं। पादयोः पाद्यं नमः, हस्तयोरर्घ्यं स्वाहा, मुखे आचमनीयं, मुखे मधुपर्क-सुधां, शिरसि स्नानं समर्पयामि नमः, एतत् ते वाससी नमः, एतानि सौभाग्याभरणानि नमः। गन्धो नमो ललाटे, अक्षतान्निवेदयामि ललाटे, एतानि पुष्पाणि वौषट् इति ।

कलश के समीप वृत्त-चतुरस्र मण्डल पर घण्टा की स्थापना कर 'ॐ जय-ध्वनि-मन्त्र-मातः स्वाहा' से उसकी गन्धाक्षत-पुष्पों द्वारा पूजा करे। फिर 'फट्' से उसका प्रोक्षण और 'नमः' से अर्चन कर उसे बजावे। 'ह्लीं एतत् ते धूपो नमः' से दीप-पात्र को 'फट्' से प्रोक्षित कर 'नमः' से उसकी पूजा करे। तब घंटा-वादन करते 'ह्लीं एष ते दीपो नमः' से दीप दिखावे। नैवेद्य-पात्र को चतुरस्र पर स्थापित कर 'फट्' से प्रोक्षित करे। फिर 'नमः' से उसकी पूजा कर 'ह्लीं' से उसे अभिमन्त्रित करे और धेनु-मुद्रा से 'वं' द्वारा अमृतीकरण करे। तदनन्तर 'अमृतोपस्त-रणमसि स्वाहा' से आचमन देकर वाम पद्म-मुद्रा से नैवेद्य-पात्र को पकड़ कर 'प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा' से प्राणादि पञ्च-मुद्राएँ दिखावे। फिर 'पानीयं समर्पयामि नमः' से जल प्रदान कर पुनः प्राणादि पञ्च-मुद्रायें दिखावे और 'ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा' से उत्तरापोषण शुद्धाचमनीय प्रदान करे। इसके बाद 'मूलं श्री बगलामुखी-पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः' से तीन बार पूजन-तर्पण कर ताम्बूल देवे।

छठा उल्लास

आवरण-देवता-पूजन

प्रथम आवरण—देवी के अग्नि-कोण में 'ह्लीं हृदय-शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः', ईशान-कोण में 'ह्लीं शिरः-शक्ति०', नैर्ऋत्य-कोण में 'ह्लूं शिखा-शक्ति०', वायव्य कोण में 'ह्लैं कवच-शक्ति०', मध्य में 'ह्लौं नेत्र-शक्ति०', दिशाओं में 'ह्लः अस्त्र-शक्ति०', पूर्व-द्वार में 'गं गणपति०', दक्षिण-द्वार में 'वं वटुक०', पश्चिम-द्वार में 'यां योगिनी०', उत्तर में 'क्षं क्षेत्र-पाल०', मध्य में 'मूलं श्री बगलामुखी०', से पूजन-तर्पण कर हाथ में पुष्पाक्षत लेकर निम्न मन्त्र से समर्पित करे—

अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागत-वत्सले !
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

'अनेन प्रथमावरणार्चनेन श्रीपरदेवता प्रीयताम्' से पुष्पोद्धृत शङ्खोदक समर्पित कर योनि-मुद्रा से प्रणाम करे।

द्वितीय आवरण—त्रिकोण के ऊपर वायव्य से ईशान-पर्यन्त 'दिव्यौघ-गुरु श्रीपा०, सिद्धौघ-गुरु०, मानवौघ-गुरु०, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः श्रीअमुकाम्बा-सहित श्रीअमुकानन्दनाथ स्वगुरु०, श्रीअमुकाम्बा-सहित श्रीअमुकानन्दनाथ परम-गुरु०, श्रीअमुकाम्बा-सहित श्री अमुकानन्दनाथ परात्पर-गुरु०, श्रीअमुकाम्बा-सहित श्रीअमुकानन्दनाथ परमेष्ठि-गुरु०' से और मध्य में 'ह्लीं श्रीबगलामुखी०' से पूजन-तर्पण करे। पुष्पाक्षत फिर पूर्ववत् समर्पित करे—

अभीष्ट-सिद्धि मे देहि शरणागत-वत्सले !
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

'अनेन द्वितीयावरणार्चनेन श्रीपर-देवता प्रीयताम्' से शङ्खोदक समर्पित कर योनि-मुद्रा से प्रणाम करे।

तृतीय आवरण—त्रिकोण के मध्य में देवी के दक्ष भाग में 'ह्रौं जूं सः त्रिशूलनाथ श्रीपा०' से और त्रिकोण में अपने आगे से वामवर्त से 'ऐं ह्रीं श्रीं कामरूप-पीठस्थ-क्रोधिन्यम्बा०, पूर्णगिरि-पीठस्थ-स्तम्भिनी अम्बा० जालन्धर-पीठस्थ-मोहिन्यम्बा०' से और बिन्दु में 'महोड्यान-पीठस्थ श्रीबगलामुख्यम्बा०' से पूजन-तर्पण करे। तदनन्तर पूर्ववत् पुष्पाक्षत समर्पित करे। यथा—

अभीष्ट-सिद्धि मे देहि···तृतीयावरणार्चनम् ॥

अनेन तृतीयावरणार्चनेन श्रीपर-देवता प्रीयताम्' से शङ्खोदक देकर योनि-मुद्रा से प्रणाम करे।

चतुर्थ आवरण—षट्कोण में 'पूर्वे ॐ सुभगाम्बा श्रीपा०, अग्निकोणे भग-सर्पिण्यम्बा०, ईशाने भग-वहाम्बा०, पश्चिमे भग-मालिन्यम्बा०, नैऋत्ये भग-सिद्धाम्बा०, वायव्ये भग-निपातिन्यम्बा०, मध्ये मूलं श्रीबगलाम्बा०' से पूजन-तर्पण कर पूर्ववत् पुष्पाक्षत प्रदान करे। यथा—

अभीष्ट-सिद्धि मे देहि···चतुर्थावरणार्चनं ॥

'अनेन चतुर्थावरणार्चनेन श्रीपर-देवता प्रीयताम्' से शङ्खोदक समर्पित कर योनि-मुद्रा से प्रणाम करे।

पञ्चम आवरण—अष्ट-दल में पूर्व से 'ॐ ह्रीं असिताङ्ग-भैरव-युत-ब्राह्मयम्बा श्रीपा०, रुरु-भैरव-युत-माहेश्वर्यम्बा० चण्ड-भैरव-युत-कौमार्यम्बा०, क्रोध-भैरव-युत-वैष्णव्यम्बा०, उन्मत्त-भैरव-युत-वाराह्यम्बा०, कपाल-भैरव-युत-इन्द्राण्यम्बा०,

भीषण-भैरव-युत-चामुण्डाम्बा०, संहार-भैरव-युत-महालक्ष्म्यम्बा' से और मध्य में 'मूलं श्रीबगलाम्बा०' से पूजन-तर्पण कर पुष्पाक्षत प्रदान करे। यथा—

अभीष्ट-सिद्धि मे देहि⋯पञ्चमावरणार्चनं ॥

'अनेन पञ्चमावरणार्चनेन श्रीपर-देवता प्रीयताम्' से शङ्खोदक देकर योनि-मुद्रा से प्रणाम करे।

षष्ठ आवरण—षोडश-दल में देवी के आगे से प्रदक्षिण क्रम से—

'ॐ अं बगला श्रीपा०, ॐ आं स्तम्भिनी०, इं जृम्भिणी०, ईं मोहिनी०, उं वश्या० ऊं आर्षिणी०, ऋं उच्चाटिनी०, ॠं दुर्धरा०, लृं कल्मषा०, लॄं धीरा०, एं कलना०, ऐं कालकर्षिणी०, ओं भ्रामिका०, औं मन्द-गमना०, अं भोगिनी०, अः योगिनी०' से और मध्य में 'मूलं श्रीबगलामुखी०' से पूजन-तर्पण कर पुष्पाक्षत समर्पित करे। यथा—

अभीष्ट-सिद्धि मे देहि⋯षष्ठमावरणार्चनं ॥

'अनेन षष्ठावरणार्चनेन श्रीपर-देवता प्रीयताम्' से शङ्खोदक देकर योनि-मुद्रा से प्रणाम करे।

सप्तम आवरण—त्रिवलय में 'सं सत्वगुण श्रीपा०, रं रजोगुण०, तं तमोगुण०' से और मध्य में 'मूलं श्रीबगलामुखी०' से पूजन-तर्पण कर पुष्पाक्षत प्रदान करे। यथा—

अभीष्ट-सिद्धि मे देहि⋯सप्तमावरणार्चनं ॥

'अनेन सप्तमावरणार्चनेन श्रीपर-देवता प्रीयताम्' से शङ्खोदक देकर योनि-मुद्रा से प्रणाम करे।

अष्टम आवरण—चतुरस्र की प्रथम वीथी में स्व-स्व-दिक्षु में 'लं इन्द्र श्रीपा०, रं अग्नि०, यं यम०, क्षं नैरृत्य०, वं वरुण०, वां वायु० सं सोम०, हं ईशान०, इन्द्रेशानयोर्मध्ये

आं ब्रह्म० । नैर्ऋति-वरुणयोर्मध्ये ह्रीं अनन्त०, मध्ये मूलं श्री-बगलामुखी०' से पूजन-तर्पण कर पुष्पाक्षत समर्पित करे। यथा—

अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि ··· अष्टमावरणार्चनं ॥

'अनेनाष्टमावरणार्चनेन श्रीपर-देवता प्रीयताम्' से शङ्खोदक देकर योनि-मुद्रा से प्रणाम करे।

नवम आवरण—चतुरस्र की द्वितीय वीथी में इन्द्रादि के समीप क्रम से 'वं वज्र श्रीपा०, शं शक्ति०, दं दण्ड०, खं खड्ग०, पां पाश०, अं अंकुश०, गं गदा०, त्रिं त्रिशूल०, पं पद्म०, चं चक्र०' से और तृतीय वीथी में 'पूर्वे गं गणपति०, दक्षिणे क्षं क्षेत्रपाल०, पश्चिमे वं बटुक०, उत्तरे यां योगिनी०, मध्ये मूलं बगलामुखी०' से पूजन-तर्पण कर पुष्पाक्षत प्रदान करे। यथा—

अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागत-वत्सले !
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम् ॥

'अनेन नवमावरणार्चनेन श्रीपर-देवता प्रीयताम्' से शङ्खोदक देकर योनि-मुद्रा से प्रणाम करे।

सातवाँ उल्लास

नित्य-होमादि विसर्जनान्त विवरण

मूल से गन्धाक्षत, सौभाग्य-द्रव्य, पुष्प, धूप, दीप निवेदित कर चतुरस्र मण्डल पर नाना-पक्वान्नादि-युक्त महा-नैवेद्य का पात्र स्थापित करे। मूल से उसका अभ्युक्षण कर मूल ही से तीन बार उसे अभिमन्त्रित करे और निम्न मन्त्र से उसे समर्पित करे—

मूलं हेम-पात्र-गतं दिव्यं परमान्नं सुसंस्कृतम्। पञ्चधा षड्-सोपेतं गृहाण परमेश्वरि साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीबगलामुख्यै नैवेद्यं निवेदयामि नमः।

तदनन्तर यथाशक्ति मन्त्र-जप कर पूर्ववत् निवेदित करे।

नित्य-होम

साधक यदि साग्निक हो, तो नित्य-होम करे। यथा—कुण्ड के स्थण्डिल में मूल से अग्नि की प्रतिष्ठा कर 'फट्' से क्रव्याद का अंश नैऋत्य में फेंककर अग्नि में देवी का आवाहन-पूजन कर मूल से पञ्चाहुतियाँ प्रदान करे। फिर षडङ्ग से आहुतियाँ देकर गन्धादि से पुनः पूजन कर देवता का पीठ में संयोजन कर वह्नि का विसर्जन करे। यथा—

भो भो वह्ने महा-शक्ते सर्व-कर्म-प्रसाधक !
कर्मान्तेऽपि सम्प्राप्ते सान्निध्यं कुरु सादरम् ॥

नित्य-होम करने के बाद सिंहासनस्थ पूर्वादि चार दिशाओं या ईशानादि विदिशाओं में और मध्य में त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्रात्मक पाँच मण्डल लिखकर उनमें अन्नादि-व्यञ्जन-युक्त बलि-पात्र स्थापित कर बलि प्रदान करे। यथा—

बटुकादि पंच-बलि

पूर्व में 'वटुकाय नमः' से गन्धादि द्वारा पूजा कर 'एहि एहि देवी-पुत्र, वटुकनाथ, कपिल-जटा-भार-भासुर, त्रिनेत्र, ज्वाला-मुख ! सर्व-विघ्नान् नाशय नाशय सर्वोपचार-सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा' से तर्जनी-अंगुष्ठ द्वारा बटुक-बलि प्रदान करें।

दक्षिण में 'यां योगिनीभ्यो नमः' से गन्धाक्षत द्वारा पूजन कर 'ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगन-तले भूतले निष्कले वा, पाताले वा, तले वा, पवन-सलिलयोः यत्र कुत्र स्थिता वा, क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृत-पदा धूप-दीपादिकेन प्रीता देव्यः सदा नः शुभ-बलि-विधिना पान्तु वीरेन्द्र-वन्द्याः । यां योगिनीभ्यः सर्व-योगिनीभ्यो हुं फट् स्वाहा' से कुञ्चित वामांगुष्ठ-मध्यमानामिका से योगिनी-बलि प्रदान करे।

पश्चिम में 'क्षां क्षेत्रपालाय नमः' से पूजन कर 'क्षां स्थान-क्षेत्रपाल सर्व-कामान् पूरय पूरय स्वाहा' से कुञ्चित वामांगुष्ठा-नामिका से क्षेत्रपाल को बलि प्रदान करे।

उत्तर में 'गं गणपतये नमः' से पूजन कर 'ॐ गां गीं गूं गैं गौं गः गणपतये वर वरद सर्व-जनं मे वशमानय सर्वोपचार-सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा' से कुञ्चित-मध्यमा से बलि दे।

अब मध्य के मण्डल पर बलि-पात्र स्थापित कर 'ॐ व्यापक-मण्डलाय नमः सर्व-भूत-गणा इहागच्छत' से आवाहन करे और गन्धाक्षत-पुष्पों से पूजन कर 'ॐ ह्रीं सर्व-विघ्न-कृद्भ्यः सर्व-भूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा' से तत्त्व-मुद्रा द्वारा सर्व-भूत को बलि प्रदान करे।

तदनन्तर पूर्ववत् मण्डल बनाकर उसमें देवी का आवाहन-पूजन कर अन्न-व्यञ्जन-युक्त बलि-पात्र रखकर 'मूलं बगले एहि एहि मम विघ्नान् नाशय नाशय अमुक-दुष्टं खादय खादय अमु-

कस्य वाचं मुखं स्तम्भय स्तम्भय ममेप्सितं कुरु कुरु इमां पूजां बलिं च गृह्ण गृह्ण स्वाहा' से तत्व-मुद्रा द्वारा देवी को बलि प्रदान करे। इसके बाद देवी को उत्तरापोषण कराकर मुख-प्रक्षालनार्थं आचमन देकर फल, ताम्बूल, दक्षिणा और राजोपचारों से उन्हें संतुष्ट करे और अन्तस्तेज का बहिस्तेज से एकीकरण कर तीन बार कुल-दीप निवेदन करे। फिर मूल से मन्त्र-पुष्पांजलि देकर प्रदक्षिणा करे और नमन कर यथाशक्ति जप करे। अन्त में 'गुह्याति०' से जप समर्पित कर साष्टाङ्ग प्रणाम कर वन्दना करे—

नमस्तुभ्यं जगद्-धात्रि ! भक्तानां हित-कारिणि !
जगद् - भीति - विनाशिन्यै सर्व - मङ्गल - मूर्तये ॥

इस समय कवच, सहस्र-नामादि का पाठकर बारम्बार देवी को प्रणाम करे और क्षमा-प्रार्थना करे—

अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे ।
कोऽपरः सहते देवि ! केवलं स्वामिनीं विना ॥

तब सुवासिनी व सामयिकों (साधकों) का पूजनादि करे—

सुवासिनी-साधक-गुरु-पूजनादि

मूल से देवी-रूपिणी सुवासिनी को गंधाक्षत-पुष्प-सौभाग्य-द्रव्य देकर उनकी और सामयिकों की पूजा करे। फिर तीर्थ-पूरित पात्र ग्रहणकर द्वितीय (शुद्धि) खण्डाक्षत से अपने सिर पर निम्न मन्त्रों द्वारा तीन या एक-एक बार पूजन-तर्पण करे—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः श्रीअमुकाम्बा-सहित श्रीअमुकानन्दनाथ स्व-गुरु श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ... ह्सौः स्हौः श्रीअमुकाम्बा - सहित श्रीअमुकानन्दनाथ परम - गुरु०, ॐ ऐं ह्रीं

श्रीं…हसौः स्हौः श्रीअमुकाम्बा-सहित श्रीअमुकानन्दनाथ परापर-गुरु०, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं…परमेष्ठि-गुरु० ।

अब षडाम्नाय-देवताओं का पूजन-तर्पण करे । यथा—हृदय में 'गं गणपतये नमः गणपति श्रीपा०, ॐ नमः शिवाय शिव०, ॐ ह्रीं वटुकायापदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं वटुक०, श्रीं ह्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा अन्नपूर्णा०, ह्रीं भुवनेश्वरी०, ऐं क्लीं सौः बाला० (पूर्वाम्नाय) ।

ॐ ह्रौं जूं सः मृत्युञ्जय०, ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा बगलामुखी० (दक्षिणाम्नाय) ।

ॐ ह्रीं रक्त-चामुण्डे तुरु तुरु अमुकं मे वशमानय स्वाहा रक्त-चामुण्डा०, ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे चण्डी०, ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः दुर्गा०, ह्स्रैं हसकलीं ह्स्रौः भैरवी० (पश्चिमाम्नाय) ।

क्रीं काली०, त्रीं तारा०, हूं छिन्नमस्ता०, धूं धूं धूमावति स्वाहा धूमावती०, क्लीं मातङ्गी०, श्रीं कमला० (उत्तराम्नाय) ।

क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा महाविद्या ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्व-दुष्टानामित्यादि० (ऊर्ध्वाम्नाय) ।

हसौः स्हौः परा-प्रासाद-परा० (अनुत्तराम्नाय) ।

तत्व-शुद्धि एवं शक्ति-प्रसाद-प्राप्ति

तदनन्तर तत्व-शुद्धि करे । यथा—अं आं…अं अः आत्म-तत्वेन स्थूल-देहं शोधयामि स्वाहा । कं…मं विद्या-तत्वेन सूक्ष्म-देहं शोधयामि स्वाहा । यं…क्षं शिव-तत्वेन कारण-देहं शोधयामि स्वाहा । अं…क्षं सर्व-तत्वेन जीवात्मानं शोधयामि स्वाहा ।

अब शक्ति-दत्त प्रसाद स्वीकार करे ।

विसर्जन

दश बार मूल-मन्त्र का जप कर शङ्ख को उठावे और 'इतः पूर्वं प्राण-बुद्धि-देह-धर्माधिकारतो जाग्रत्-स्वप्न-सुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं श्रीगुरु-देवत-चरणार्पणमस्तु स्वाहा' से कुछ शङ्खोदक को देवी के वाम-कर में समर्पित कर शङ्ख को देवी के ऊपर तीन बार घुमाकर उसके जल से अपने को तथा सामयिकों को प्रोक्षित करे। शङ्ख को यथा-स्थान रख उसे पुष्पांजलि देकर निम्न प्रार्थना-मन्त्र से देवताओं का विसर्जन करे—

नवावरण-संस्थाश्च अत्र पूजित-देवताः, श्रीसुन्दर्यङ्ग-लीनाश्च यान्तु सर्वा यथा-सुखम्। मत्समः पातकी नास्ति, पापघ्नो नास्ति त्वत्समा। भो मातर्यथा-योग्यं तथा कुरु।

अब संहार-मुद्रा से तेजो-रूपा भगवती को पुष्प के साथ उठाकर पूरक योग से उन्हें हृदय और मूलाधार में स्थापित कर उस पुष्प को वाम भाग में वृत्त-चतुरस्र मण्डल पर स्थापित करे। वहाँ 'निर्माल्य-वासिन्यै नमः' से गन्धाक्षत-पुष्पों द्वारा उसको पूजा कर 'उच्छिष्ट-चाण्डालि मातङ्गि ! सर्व-वशङ्करि स्वाहा' से विशेषार्घ्य-बिन्दु और नैवेद्य देकर 'यथा-सुखं गच्छेद्' से विसर्जन कर विशेषार्घ्य - पात्र को उठावे और उसके द्रव्य को दूसरे पात्र में लेकर 'प्रकाशामर्श-हस्ताभ्यामवलंब्योन्मनी स्रुचा धर्माधर्म-कला-स्नेहं पूर्ण-वह्नौ जुहोम्यहम्' से उसे स्वीकार करे। तब उस पात्र और विशेषार्घ्य-पात्र को जल से धोकर उस पर अक्षत या पुष्प छोड़कर गुरुदेव को प्रणाम करे—

देव-नाथ ! गुरो, स्वामिन् ! देशिक, स्वात्म-नायक !
त्राहि त्राहि, कृपा-सिन्धो ! पूजां पूर्णतरां कुरु॥